

२ सुप्रवर्तनी जात्रवर्तनी मित्र पतिस्मिन् यवहवर्तनी पाव
समातात्रयशुभं नृमा सुयस्य नाना खशाशा
समातात्रयशुभं नृमा सुयस्य नाना खशाशा

ॐ नमो रागवत वासुदेवाय ॥ ॥ जनमं जयतु वाच ॥ जयनं च समुत्पन्न नगनः
हस्तिनापूरं मुनूनां पृच्छतां नाराजनं मयं यमहावनि ॥ १ ॥ ॥ नाराजानमः
जयमहावलिमुनूदेवाय नमः पतिं नृपं कुतः ॥ कस्मिन्सति जयं नृपं गहस्ति
नापूरं नृपं मधुसूदनं सति ॥ २ ॥ ॥ नाराजानमः जयनं मुनूदेवाय
अविषाकं दं ना, युधिष्ठिरमहा नाराजायाकं धर्मगन्धर्वान् नृपका
याववानां कुनपा नमस्कृतं हीतश्याववाह, सूर्याय कुनपा नमः व
महानि दे, थला जं का दावविद्या हुनं धर्कं, जनमं जयनं देवाय

अविषाकं दं न ॥ ३ ॥ ॥ नृप नाराजानपुत्रका मि, कथयामिनसं न
य ॥ ॥ प्रकथा सर्वदं वं, नृप देत्या सर्वमनि ॥ ४ ॥ ॥ देवाय अवि
नला ला ॥ ॥ हमला नाराजानमं जय, कुनपा तस कुसंदं हमदमका व
जन को नं दं हुनं धर्कं ॥ ॥ नृप देत्या समयस, समस्तदं दे, नृप दे
य, मुनि, वक्रादि दं व, धर्कं दं दं दं स मावयाह अविषनि ॥ ॥ वक्रा राम
दिअविष सर्व, देया देयसुता धुनि ॥ विष्णु देव समायुक्ता, नति वक्रा वि राम
नायक ॥ ॥ तथा सनसति गंग, क नं व नाराधिनं, रांधवा वग ना

सर्व्ववनस्य तितता रुवत् ॥ ॥ तद्रुग स्वा मुनि ॥ दवर्षि नानद सु
था ॥ नमः ॥ सुखा रुना दवर्षि नानद वाक्मवुवीत् ॥ ॥ नानद उवा
च ॥ ॥ वक्रा आदिन समस्त अषिपनि ॥ वक्रुर्वे देसवपनि विष्णु सहि
तन ॥ यत्र ॥ सूर्य ॥ ग ॥ ग ॥ ग ॥ कालदिग ॥ दवता गंधर्वगन समस्त
वनस्य तितदवता दक्क मूढा ववात् ॥ थना वा दाव ॥ नानदन ॥ श्री महाद
व आदिन ॥ दव अषि समस्त ॥ नमस्तुता नया दाव ॥ नानदन ॥ काला ॥
॥ नानद उवाच ॥ ॥ दवस्य णीक वा नाम ॥ वक्रा विष्णु सह ॥ न

युधिष्ठिर समा नागा नरुता नरु विष्णुति ॥ ॥ हवक्रा विष्णु सह
॥ न ॥ युधिष्ठिर वधि ॥ नागा मवदवर्षि मख ॥ दयि व ॥ मख ॥ दस्य वा दमद
॥ ॥ सत्य वादि जिता क्रामा ॥ धर्म णील प्रवर्तत ॥ ॥ तस्य सत्य समा
नास्ति ॥ धर्म पूजा युधिष्ठिर नः ॥ ॥ वल्लू ॥ ह्येव रु विष्णु दा ॥ वेना वन
वलि स्तथा ॥ नन घोषस्य मा ध्याना ॥ समादृष्टा युग युग ॥ ॥ तस्य सत्य
समानास्ति ॥ नन सत्य नको रुवत् ॥ ॥ युधिष्ठिर याधि समान सत्यः
सूर्या मद् ॥ धर्म या काय ॥ वल्लू नो जा ॥ रु विष्णु दा ॥ वेना वन नागा

नन घोष वा घोष नाज्ञा मा न्ना नाज्ञा यूग २ सं थ सय धिष्ठि न थि ३
सं त्य वं त म व म द ॥ ॥ थ थ ना व द या कं ग्री णं क न न मा द ण द
ता थ गु लि खा वै ण म्मा य नि धि न नाज्ञा न न म्म जय का ना ॥ ग्री द व
या स जं गु नून मा द ण द ता ध कं का ना ॥ ॥ न व गु र्त्वा त तो वा क
ध म्मा पि रु ष प् वि तं ॥ क न नृ प न प न्ना मि म म प् रा य धि धि न ४ ॥ ॥
॥ थ र्व ध म्म न ता या व म्मी न्ना न न्द या दा व (म गु न नृ प न जं का य य धि
धि न या ना ष्ठ स सा न वा (न ध का व ॥ ॥ वि वि त्र ध म्म थ ल ना ध

सं पृ थ्वा मं उ ल स थ थि नाज्ञा म द मा हा हा न न य र्ध थून का व न्ना न न्द
न म्म न्म म ध य रु या दा व वा ल ॥ ॥ ध म्म वा ला व नृ प न प् रा ना ष्ठ नि
वि धि तं ॥ ५ गु हा द व ला का व् प्रा फं व रु सि ना प् वि ४ ॥ ॥ म्म म ध
या न्ना न र स जं ध म्म वा ज न नृ प रु या व न्ना न थ य धि धि न या व वा हा
न सा य ध का व रु सि ना प् न स वा ल ॥ ॥ म्म व ला कं प् वि स व् वा
न दा न व ति षु ति ॥ निर्म ल हा न त य र्ध न प ति य धि धि न ॥ ॥
वि वि त्र ध म्म थ ल ना ष्ठ ना ष्ठ स पृ थ्वा मं उ ल स थ थि न नाज्ञा म द मा हा

समागमं ज्ञानिनवननज्ञानानि युधिष्ठिरस्यमदिनं ॥ कस्योत्तं
 वनज्ञानानि नारुदावसमागतां ॥ अथवा अनेगनानवयाकु
 गथकुनधुतलीयुधिष्ठिरमहा नारायणनाक्षमसिमा ॥ स्वर्ग
 मत्यपातलसंप्रकांति धर्मया काययुधिष्ठिरथचिदकायाकुस
 दुकावननमसिपकाव विद्यावमयास्य नारुदावसुजायाधकावलीम
 सननवा अनेगना ॥ ॥ वा अनेगना ॥ तं विद्यायानुज्ञानां
 मद्यसर्ववदादना ॥ दानानादाननदस्य त्रेलाकं ववनावन ॥ ॥

नृधामिअविसहस्राक्षं वाक्कलस्यदिनदिनं ॥ उरुगंकनकपात्रंयू
 धिष्ठिरस्यमदिनं ॥ मद्ययावर्षननाज्ञा पुतिवाक्कवदीम्यहं ॥
 कृष्णमद्ययनवद्विमलयाज्ञननतायदता ॥ दानानदानयाजाया
 नद त्रेलाकसंतायदता थथनजंनसया ॥ ॥ गमकायाकात्रः
 स मृति ८८०० अविगलवाक्कलनित्यनित्य नृधामस ॥ ॥ हाज्ञन
 यावकव मद्यनवार्गवका थहागीनयागा धयाधया नृपदार्थ
 विस्यवाठ ज्ञंमृतिनपत्याकनयमासा ज्ञधिठवा अनेगनाप्रतिमानय

मवमइथयिह (गम वा अत्र न स चानव ना धा व॥ ॥ लीमसंनडवाव॥
॥ ॥ ब्राह्मण कृत्रिया वेध नूद्रा (येव च उर्थक॥ ॥ नृगानिवत्तु हीनस्य
कथं दर्शन किं वें न॥ ॥ वा अत्र नया स्वात्र सायाया श्री सूर्ययान नु
निष विग्रह य वा अत्रेया वें सहाषमया दाया स्नानया दान नु निष विग्र
ह य ब्राह्मण कृत्री वेध सुद पं ना जात वा हि केन मवया स्वात्र साया
या कृप्रदार्थ॥ ॥ वा अत्र नडवाव॥ ॥ लीहिं कुं गु विं ड (थं सुख
दू४ खेड (थं पयं वं विं ड (थं ग (थेन पं ना जात रुला॥ ॥ लीमसंन

डवाव॥ ॥ ड वं कयन गंधर्वा (गमयाया कृगन कथ॥ ॥ समाजस्य श्री
वतस्य सुसमानविवर्जित॥ ॥ लीमसंनन धा ना॥ ॥ निन्द क४
पिनुन (येव कृपघ्न दय सागीना॥ ॥ वत्ताना कृत वा अत्र पयम॥ ॥ निसेधा
ववृथा यस्य वेदा यस्य पनां गति॥ ॥ क्रिया हीनस्य या विप्रा सापि यां अत्र ड या
न॥ ॥ दन्त सुवि विना राक पादो प्र का ल्यनं विना॥ ॥ मृदू दव (गम विन्द सा
पि वा अत्र नडवाव॥ ॥ केपित्ता विवपा (गम न ब्राह्मणी गम (गम न व
वेदा कृत विवा न स सडन न क वृजं न॥ ॥ कृणा ना ली मृत न ग र्या

मृतगृहवृत्ताङ्गनं ॥ नवगृहीत्यायाविषा सापिवाङ्गन उच्यते ॥ ॥ मात
पितृनश्चेव वरुद्वर्धनवृद्धता ॥ ॥ गुरुष्वानक्रियात्पुत्रं सापिवाङ्गन उ
च्यते ॥ ॥ न केत्वाङ्गनदानादि, प्रियस्यैवमेव ॥ ॥ मिष्टान्नकुङ्क
मं कं सापिवाङ्गन उच्यते ॥ ॥ ॥ नृकपत्रिदया लघ्या प्रकगृह नपा ल
यन् नृकल्य क्रामक कुक्कं सापिवाङ्गन उच्यते ॥ ॥ ॥ इव नृक नपनका
नि मृगीथं गृहमागता साय कुक्कं सापिवाङ्गन उच्यते ॥ ॥ ॥ पक्षिर्लोक
यं ज्ञानं ॥ पञ्चवं ज्ञानगर्द्धरु ॥ ॥ मन्त्राकापर्यदा न सुर्ववसा नति दकः

॥ गच्छ २ प्रतिज्ञान युधिष्ठिरस्य मां प्रति वाञ्छनस्य समायुक्तं ॥ ॥
श्रीकृतनवाधिय हीमसनान्देष्टा वाञ्छनं सत्यराषिर्ह ॥ ॥
मातङ्गी मागता स्वामी वाङ्गनानेदियते ॥ ॥ ज्ञानातिमात्मतत्त्वपूर्ण
स्थिकृतनवाधिय ॥ ॥ ॥ वाङ्गन न धना ॥ ॥ निन्दायाद ज्ञानवक्ता
ज्ञात्वा वावायाद शवक्ता, आदयमसवक्ता दामसलासिका, श्वपक
कृत वाङ्गन धाय, दाकाका ज्ञानि वाङ्गन, ऊर्कूमा वाङ्गन ॥ ॥ ॥ स
न्नाहीनका वाक्कल, दैवं दमसव, का वाक्कल, क्रियाकर्माहीन

धक्का थूका वां गन रु वां गन मख् ॥ वापस्य मा लमहस्यः
उतिमसि स मन्त्रनवक्का धक्का थूका वां गन रु क्यु वां गन ॥ ॥
॥ ग्री कृष्ण मादिन दवया खानमसा स मन्त्रनवक्का धक्काः
थूका वां गल रु ग थ वां गल रु ला ॥ वाक्कनमभूक्का न कपि सा
याद्दूती ल वीक्का ली व संगया वेदया मूक न वि वा न या ता धक्का थू
का वां गन रु ग थ वां गन धयो ॥ तयस्यामया स्य दान का वक्का
सिक्का ना सा दान का वक्का सिक्का दया व वां ले मन्त्रनवक्का वन सः

मंगवक्का सा या व मा मडा हा वक्का धक्का थूका वां गन रु ग थ वां
गल ला ॥ मा म व वक्का वल मड्क्का ० जि धि ख हा व स वा =
मया कक्का काय धक्का वां गन रु क्यु वां गल ॥ ॥ त्रि सक्का तर्प्येन
मया क मेथून मादिन सा क हि द थ मया क तन रु क्यु न वक्का धक्का
थूका वां गन रु क्यु वां गन ॥ सा या प्या स वां ले ना ख मता
न क वक्का धक्का थूका वां गन रु क्यु वां गन ॥ वि वा ल याः
हा व न या फी कून वं त क न्या सा ला य मा न रु या व या द दा ष म द य क

गानगावच्छाकका थका थका वांजन रुच्छु वांजन ॥ यात्ता
 गुंवायवगुर्विनिप्रसंगयाकका थका थका वांजन रुच्छु वांजन
 आत्मरुत्यावडति रुंवांजलग थयया धर्क ॥ पंकि सकाषवा
 जल पणसगधु वांजल ॥ मन्कयाका धवांजन थयासिनै वां
 जलनिन्दायाकै दाव रुवका थका वांजल रुच्छु वांजन धर्क धया
 ॥ ॥ रुन्क रुच्छु वांजनयाकै काया कर्ममया दा धर्क ॥ रुनि २
 दाव पाव यधिवि नयाकै धका वांजन रुच्छुका दाव सदादव ना

पात्तादाव विष्का रुने धर्क दाव द दाव ॥ हीमसन थत्वा सत्य
 खव लानपाव यधिवि नयाकै वदाव हीमसन रुं नापयाता रुम हा
 = नाजयधिवि न रुं रु सदाव सदाद वांजन नाना सत्य धर्मखाका कः
 रुत्त पावसननपात्ता यिवना नापा नादान रुदा धमद ॥ गा
 कान आत्मरुत्यान सत्ता रुका नापात्ता दाव दाधमद धर्क ॥ हीम
 सत्तामहावादा किमर्थ आगर्तवया ॥ त्वकिं कार्या नमस्तस्य तता
 वाक्क निवेदयत् ॥ यधिवि न हीमसनयाक आग्धयक ना

श्रुय तीमसनमहावाहूकू दून दूधधना वया॥ श्रामायाखा रु की
ला श्रामाया नाम कू दूधया को ननदा थ ना वया ध का व डं हा॥

॥ तीमसन उवाच ॥ ॥ मृगुवाहनं रुथावर्तु या दृष्टं
कथयाम्यहं वांशान् श्रामाया दानैः यथा वाक्कै निर्वदयन् ॥

मूनक वाद्यमयं कृत्वा नमातस्य महात्मनः॥ श्रुतिथ श्रामाया दानैः श्रु
तिविद्या नवाधिपः॥ तीमसनं न युधिष्ठिरया के न्नापयाता रुम
हाना रुवर्तु क डं दून गथे शान क्ता ना मृथे रुन न्नापया

य मूनक वाद्यविवाद्यत्वा क्ता क॥ धृक्कामाहात्मा सत्यवादिमाता न
मस्का न दान स नृति त विद्या व क थ चिं ड का वा न वा न नमस्का न
या य या ग्ध धर्क तीमसनं न क्ता ला॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

॥ कुरुहि कुरुहि पूनः कुरुहि सत्यवाक्कै वृकादनः वायुपुत्रजिता रुन
धर्मस्य तीमसनया॥ ॥ किं दृग्धतिमन्व्यानी सर्वज्ञमु विज्ञानद
॥ दान तिष्ठति वांशान् किं नृपस्य वृकादनः॥ ॥ श्रुय तीमस
न पून दान रुनं जिन धेय वायु पुत्र कू धर्म पुत्र रुम नू दया रवा

ननु सायसममु गममु मवनं च । आमादान सवाढया नाम कृत्
प गधिदधर्क ॥ ॥ लीमसन उवाच ॥ ॥ काक काकिं न वे
र्जनां कृत्पनं कलाचनं ॥ अमृग्रीवं मूर्धकं गीवाकं येव धृत्
ता ॥ ॥ लीमसनं न क्षात्रा का रयका किन वल्गुखात्र कृत्पनि
खाद्वाद् वमुहाक सां द्वाकं न पस्वाकं थहायाव वाढ वचन
मृति कामल धर्क ॥ ॥ यधिष्ठि न उवा ॥ ॥ गर्क गर्क दना
वावि यां जना पापकर्म्म ल ॥ अदृष्टि दानमर्क व कथं न स्पः

मृहं गता ॥ ॥ यधिष्ठि न न क्षात्रा ॥ ॥ मर्थां द्वा व आः
मा यां जना मसा यथ दृता दान थका थधिद वां जना गथः
कृत् रं कृत् सवला ॥ ॥ लीमसन उवाच ॥ ॥ मृतिथ आ ग
तादानं किं कलं न स्पष्ट कृत् सि ॥ यथा गर्क गथदानं यद्गर्धर्म
विधीयते ॥ न तस्य दर्शनं न स्पष्टत्वा लोकदायनं मं हा प्रह्ला
महानं सत्यं सत्यन नाधिपः ॥ ॥ लीमसनं न यधिष्ठि न काः
ना ॥ हं न नाधिप क्षात्र स मृतिथ वया व वाढ थका या कलः

नीलविलासयायथ मरुकोदानवियमात् ॥ ॥ मृग्यमंधयद्रु
धिंअयसवव ॥ ॥ धुर्कंपूर्वषगलनमखाढाधुयार्थिसह्य
वादिखाढनमन्याढा महानवधदहानिधुतवधदश्रीः
स्माधुयानिधुय २ धुयार्जनसंयाधकं ॥ ॥ यधिष्ठिन
उवाच ॥ ॥ कस्यगीमागताद्वानं कृतावागृहमागता ४ यथा
हृदयावाक्यं ततोवाक्यनिर्वदयत ॥ ॥ मृगहीमस्रनः
वूनसंनतावधुक्कागनानवना सूर्योर्कंयाना गधेनना ३

दानसखीनवनागधेवूनसंया मृधेवूनमालेकीढेढाव
विकनर्जकीढावधकं ॥ ॥ यधिष्ठिनयाखा हीमस्रनः
नढेढाववांजानवाकं क्रायाववांजानवयूधिष्ठिनडीना
पालानकला गधेलेदूवेलेयूधिष्ठिनगयाव ॥ ॥ यधिः
धिष्ठिनयाकंपावांजानलखाढाव मृगिहृषमानयाढाव काला
॥ ॥ वांजानउवाच ॥ ॥ नाशोर्वधुमूर्धधूना नाशोव
हृन्वहृषा पिता माता ३ नृत्तव ३ नृत्तवगया ३ ॥ ॥

॥ पासाधिधि ॐ हू मिश्रमदक्राया नाशा ॥ गुग्गुलुमदक्राया गुग्गुलुतपस्या ॥
 दूर्ध्वलङ्घ्यवला नाशा वालानां नृदिर्तवली ॥ मूर्ध्वस्यवनमोत्रली अनृर्तगस्क नाव
 ॥ ॥ बलमदक्राया वलनाशा ब्रह्मलया वलविद्या ॥ बालकया वलखाय
 मूर्ध्वया वलन्वनमवाय ख्याव नरु स्वाहाय ॥ ॥ बालानां लादनवेव ॥
 ॥ ध्यायाव वलवली ॥ पक्षिर्लालमकाणी मीनस्य उदकवली ॥ ॥ धर्मस्य व
 लसख्यव ॥ नृपुत्रापां नन्दन ॥ ॥ बालकया वलखाय ॥ ध्याया वलवली
 लक्ष्म्या ॥ पक्षिर्लालमकाणी मीनस्य उदकवली ॥ धर्मस्य वलसख्यव ॥

पांशुना ज्ञाया काय दं ॥ ॥ आसा धीर्गमया धीर्गं रु धार्थमृ नरा जने ॥ ॥
 वृ नदीय तदानं सरुलं पांशु नंदन ॥ ॥ असा मु सदा ज्ञाय कावमन याप्य
 त्यान कावव क्राम र्थान कं न वपू ॥ ॥ इ वलं या ना दान विष रु न स स ॥ ॥ अ
 पूर्व दीय तदानं अपू र्ण निग यूरु न ॥ ॥ अनाथ पि पु संस्का न् का नित य इ ल लः
 ह न् ॥ ॥ अपूर्वा धिक्का अ नित या ना दान विष (ग) ल र्ण पू ज्ञा मया दा क्राम हा
 द व पू ज्ञा या य ॥ ॥ अनाथ क्राम या ना धि ३० क थ लि व पु का नित य इ य दा या रु न
 ना क ॥ ॥ ला षि र्ग र्ण क र्ण वै व क षि र्ग व र्ज ना र्दान ॥ ॥ अथ वा रु न दान र्वा (ग)

शिदुलनलाधिपः॥ ॥ श्रीमहादेवविष्णुनला॥ ॥ अधवायः
 यादायादुलवियला॥ अधवासमुखनरुनापालाव॥ ॥ ॥ दूनध्वानिपनका
 निधन निःश्रुतिनरुहमागता॥ तस्यरागप्रयत्नन श्रुतिथस्यवसंगम॥ ॥
 ॥ तापिलनरुथनावयामवयाकुसदाद श्रुतिथरुयावकुसववगमका
 याराग्ययावसा श्रुतिथनापालापिवधकं हीमयाकंधायाव॥ ॥ हीमस
 नन वंशत्रयाखादकावनाशायुधिष्ठिनया श्रुतसवृत्तार्कला॥ ॥
 हीमसनयाखागायावयुधिष्ठिनकाधला॥ ॥ युधिष्ठिनउवाव॥

यस्यलोवगुरुनास्ति कस्मिन्काष्ठाजन॥ श्रुतिथशागताद्वान्कथम
 वप्रभूप्रभुत॥ ॥ गमकायाकुसन्नमदयिवधमकुसमदयिवका
 नसश्रुतिथवयाववानिव॥ धवनसगथायायधकावकाव॥ मामावांश
 नयाकंदधकं॥ ॥ युधिष्ठिननलाकाखावापुनयाकंहीमसन
 नला॥ ॥ वापुनउवाव॥ ॥ श्रुतपानादिकापुवः
 कंदमूलरुलानिव॥ तथावसरुविप्राप्य॥ श्रुतिथस्वर्गदायक॥ ॥
 श्रुतमादिनतालापदार्थसहितरुसकं॥ नसंशुविवकु॥ श्रुतिथ

याता विमान स्वर्गवाणि ॥ ॥ अतिथिदाननिष्ठानि आत्मगुरुषु लो
 कान् ॥ उदकं वासनापित्वा उत्पलमसि सततं ॥ दानसमृद्धिं व
 याववाह्यं दायमा हि क्षामविश्रमनया वयानिव ॥ डागुल अत्र ग
 मां सडा तुल्य ॥ नाख भव तुल्य ॥ ॥ अतिथिविमुख्यानि विमुखः
 विरुद्वन्मा ॥ कातिपूजाविनश्यंति बुक्क रुस्यापदपद ॥ दानसमृद्धि
 ततया व ॥ अतिथिविमुख्यादानस्वर्गसदपित्य ॥ लोकविमुख्यं लो
 कातिपूजादानं हतमदपनाकतलत्वं बुक्क रुस्यालाना ॥ ॥

दवार्यं न ताव ॥ हीनं सत्यहीनं दयाकृत् ॥ ॥ विना अतिः
 थय दून पृथ सर्वानि सुते ॥ ॥ बोना वापित्वा लोना ॥ ॥
 = बुक्क वापित्वा गक ॥ वासुदवसमाप्राति ॥ अतिथिस्वर्गसंक्रम ॥ ॥ तावम
 दूक्का मादवपूजा सत्यमदूक्कायादया ॥ यद्द समस्तं थयससा मुनी पृथया
 निस्तुन ॥ ॥ घृह नसां वां जान रुनसां ॥ ॥ कुरु नसां मामववृत्ता ॥ काववा द
 क्का रुनसां ॥ अतिथिदानसववक्ता ॥ श्रीना नायन उति ॥ थर्क अतिथिनस्वर्ग
 वान कि व ॥ ॥ नगनवगुरु वा थनया पृष्ठ वलीनर्त ॥ अपूर्वयस्य द

पुष्पावतीर्थस्नानरुतलरुत॥ मंत्रहिनेरुतयन॥ अर्धवेवतिनेविना॥ मउ
वतिवपंकमादरुतसफकुल॥ ॥ नगरसकसमथवातीर्थस॥ मपू
रुत्तनिथखानढाव॥ तीर्थसमानयाढाहललाक॥ ॥ मंत्रहिनेनमाहनि
विद्यायद्द॥ सामलमदयकं पिठथयान॥ मउमशवप्काजिसानथनेवमुन
॥ ॥ कूनरुस्मयायूव॥ ॥ नेकुलावाथमाहलास्वनीवास्नानपूस्कन॥
मन्वमधपिणवस्यकनकपात्रन॥ छति॥ ॥ नववाहटमाखिवारा
हनसी॥ मन्वमधयद्दयाणवदनलूयाथानसहापयकानसमर्क॥ स

दुरुपीधकं॥ ॥ अतर्वादानयाकंदढावरुशनसवाढाव॥ यूपिष्ठि
नलमादणदयकला॥ ॥ यूपिष्ठिनडवाव॥ ॥ कथउत्पद्यतध
र्मकथधर्मप्रवर्तन॥ कथवथाप्यतधर्म॥ कथधर्मविनम्यति॥ ॥
गन्धनधर्मदयूव॥ गन्धनधर्मविनलवानिव॥ गन्धनधर्मतयगन्ध
नधर्मरूप॥ ॥ मतिथडवाव॥ ॥ सत्यउत्पद्यतधर्म॥ दयाधर्म
प्रवर्तन॥ रुमायाथाप्यतधर्म॥ काधर्मविनम्यति॥ सत्यनधर्मदयू
वदया॥ धर्मविनलवानिव॥ रुमासधर्मतय॥ काधनधर्मरूप॥ ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ ॥ का वा मित्र प्रदं लव का वा मित्र गृहं पृथ ॥ का
वा मित्र उ न वे वा ॥ का वा मित्रं त कालक ॥ पन दं लया मित्र स ॥ कृया मित्र
स ॥ प्राग या मित्र स पन ना कया मित्र स ॥ ॥ नृ ति थ उ वा च ॥ ॥ पन
दं लया मित्र स ॥ कृया मित्र स कृया मित्र स ॥ ॥ वि द्या कृया मित्र प्रि ॥ प्रा
ग या मित्र ॥ वा स न पन ना कया मित्र धर्म ॥ ॥ युधिष्ठिर उवा च ॥ ॥
कथं उ त्पद्यते स्वस्ति ॥ कथं स्वस्ति प्रवर्तते ॥ केन प्रवर्तते स्वस्ति ॥ कथं स्व
स्ति निवेदयत् ॥ गथेन कल्या गथेन कल्या नय का दय की ॥ कृ न कल्या

न वा निव ॥ ॥ नृ ति थ उ वा च ॥ वृक्षा ल कल्या नय कल्या ल विला ॥
॥ वृक्षा या क ना त या कं रु कल्या ल थथेन कल्या ल वा ना ॥ ॥ युधिष्ठि
र उवा च ॥ ॥ वेदं वर्धते रु पं कथं पृथ न विस्तुथ ॥ ॥ कथं तीर्थ प्र
संग न ॥ कथं पृथं गृहं स्तुथ ॥ वेदं प्र सया कृ पृथ ॥ सूर्य प्र सया कृ पृ
थ ॥ गथं तिर्थ या पृथ कृया धर्म गथेन दय ॥ ॥ नृ ति थ उ वा च ॥ ॥
वेदं पर्व न कृ पृथ द स न कृ न विस्तुथ ॥ कथं तिर्थ प्र संग न ॥ गृहं न कृ स
रु मुके ॥ वेदं प्र स स न या कृ ति न कृ द पृथ ॥ सूर्य प्र स स ति न ॥

माममदुक्कायामामवृद्धि॥वृमदुक्कायाववृद्धान॥ददाकिशामदुक्काया
ददाकिशारुमा॥कुंमसखकोमन॥॥युधिष्ठिरउवाच॥॥कनक
र्ममहादख॥कनकर्ममहासख॥कनकर्मरवकुर्वकनकर्मप्रवर्त
॥त॥॥कुं कर्मनमहादखेशना॥कुं कर्मनमहासखीशना॥कुं कर्मनगर्त
वासरेशयना॥कुं कर्मन उथ उथ वालवना॥॥श्रुतिथ उवा
च॥॥देवपूजानेकर्तव्यं॥तनपूजामहादख॥मन्त्रदाननकर्तव्यं
तनगर्वपूनःपूनः॥देवरोकतावमदयानदखिशना॥मन्त्रदाः

नममादान॥॥गर्तवासशनापत्रपुत्रधनेलालनकायान॥श्रु
द्यानननकसवीना॥थक्का उथ उथ वलवना॥॥पत्रपुत्रिया
वताशनः॥मालाथसवमेवचननायांतिमहाद्यान॥मृत्युगर्तपू
नपून॥देवमानयमादानधर्मदयानसत्यदयान॥थक्कामनू
व्यताम्यादावसखिशना॥॥युधिष्ठिरउवाच॥॥कतिश्रु
लमाकार्मी॥कतिगगदातानका॥॥कथंमद्यकयद्याना॥कति
रुस्रवसूधना॥॥माकागमनामृगुनयता॥माकागमगमनीनदे

कृद्रदता॥ मद्यननं ख धना ग्वं वि० तला थ पृथि ग्वन कृनदता
॥ मृतीथ उवाच ॥ य तु नां गुन मा कां गं द्या ग गल ता नः
का० ॥ दल धन वषत मंघा ॥ अ ऊं प्रयव संधना ॥ मा का सपे ना
गुनदता ॥ मा का ससन गति न ग्व उदता ॥ मद्यन का गत के या =
ता ॥ ग्व नी ने ना ध धा ना ना ख धा ना जि ॥ धा ना त ना थ पृथि ल्य कृ
त्या दता ॥ य धि धि न उवाच ॥ मा तु न य दि वा क न्या
पिता यस्य कु मा न का ॥ कृ हि वा कं ०० दं नृ लो क स्य दं ह

समृत्तव ॥ ॥ गम क्रो या मा न म दता ॥ व वृ वा ल ख ग्व क्रो या स
स नी न न उ त्थ हि र ना थ खा रं की का ॥ मृतीथ उवाच ॥ मी न म ध य था न
ले का ए म ध रु ता स न ॥ इ म ध धृ तं व व द्वा न व स जी व न ॥ ल म न स
ग थ व क न द ता ॥ सि स मि ग थ वा न ॥ इ इ स ध न ग थ वा ना ॥ अ ता थ इ
न द व क्रो ता म्वा ना ॥ य धि धि न उवाच ॥ मृ गि का र्थ वृ व ना यी ॥ द व मृ ति
थ मी त व न कृ पृ ता या य र्ना ग्व ख व ॥ रु द्धु ता थ क डा ना ॥ मृ ति थ उवाच
॥ न व पूर्व म यं हा का का दा ना वृ हा रु न ॥ ना ना मृ ह न हा क वी ॥ दा

पार्थव विवर्जितं ॥ कृपां लभत न कुनक मनया मवयार्द्र मनया विस्य
खन ॥ नाशा यावु समनया रौ द्वागी द मनयान दाखे मद् ॥ यच्चि नड
वाच ॥ केन दा खने तांक वा ॥ विनादा ॥ सुदति ॥ इतिष पत्रु
न दिवी संका ना सर्व नर्या ति ॥ गता ते च न गुरु सर्व निर्वृति वाक्क लम ग
ता ॥ संह प्रविप्रत्या मध्व माना यूधिष्ठिन ॥ विता माना गता नाशा ॥ को
ध वा केन वो ॥ विवर्जितं ॥ सरुम्र अविश्रू भ सी नी रुजन वगुरु म
म ॥ जैक कु दा षदा या न मनया ॥ विनादा वस ग थ मनय ॥ वयया

दा अविषयनि सननित्यं ॥ ऊ क ला ष्च न गंथ मन य ध ना ॥ ॥ नू ति थ
 उ वा व ॥ ॥ मो रु ष्मा हि त मा या ॥ न व ति र्थ ती ला व ना ॥ प्रे ला र्क मा हि
 र्मा या ॥ सत्य सत्य न ना धिय ॥ ॥ ला रु समा या न मा रु या द न ला ॥ ला व
 न स म रु स वा द मा या ॥ न स्व र्ग म ध्व पा ना न स म ॥ दान या क रु म ला ना ॥ ऊ
 नि ध्व य न ॥ थ खा सत्य सत्य ध र्क ॥ ॥ ना रा य ति ग्र हं घा र्त्त वि ष स्वा ॥ द
 स मा य यां ॥ ॥ पृ ष्मा सं व र्त्त ला का ॥ न व ना रु प ति ग्र ह ॥ ॥ ना रा या
 य ति ग्र ह ॥ का य म ला दान ॥ य स या स वा द ॥ थ द ॥ का य या ला न य ति द

[illegible]

वना राजा कुम्भ वडति ॥ ॥ उ निष्ठप तु न दिवी संकाना सर्वनर्पति ॥ गगानव
जगृहं सर्वनिष्ठं ति वाक्कलमगता सरुविप्रस्था ॥ मध्वमाना यधिष्ठि न ॥ वि
॥ तामानागता नाजा ॥ कुं धवाक्कन वदयत् ॥ ॥ ह्यधिष्ठि न दादा वड
कुं नपा न विष्ठा कुं न ॥ संखा काय मूमात्त ॥ कुं लपा न हिठपात्र ॥ कुं नपा नया
॥ कुं सनित्य २ वाक्कल सरु पुन कनसा ॥ वाक्कल मद् ध्व म्पु न दान विष्ठा
॥ वाक्कल वाना ॥ ॥ यधिष्ठि न उवाच ॥ ॥ यद्ग विष्ठा सनं कृत्वा ॥ स
॥ व विप्रगृहं गतान्मर्द्धवपि र्दुपिंठव कध्व म विप्रपूषत ॥ ॥ यद्ग वि

॥ सयातववक्रा थथा ॥ ता समस्त वाक्क जपनिमखन ॥ व अर्द्ध स ॥ ग
क्रातय ॥ ॥ मातंगक्रियनकम्मा ॥ वथायद्रु विप्रियता ॥ विं गयत् अ
॥ त्सनत्व व्यजमानायुषिष्ठिनः ॥ ॥ थवा अत्र ज्ञाति तमनखा ह्नाः
कक्षा वज्रवनाडा उचि हखा थक्रावगथ सरुयाय धर्क ॥ विं न नपाव
॥ ॥ या अत्र ज्ञाति मां जाल ॥ स नार्पस न ॥ ला विन ॥ सं ज्ञान वेव
ता वं न ॥ न प्रस्र ह रु वं रु था ॥ पापिषू आगता हान ॥ पूर्व हृत्वा क वा
॥ निय हाद न व र्ष सं प्रा फ ॥ सर्व व नि स्तु ल रु व न् ॥ ॥ थ वां ज्ञान

वमरुया ॥ हाव कर्म याय नाक ॥ स गथ लायकं संसा न स थ थि ह ॥
॥ क्रो व गथ स्त रुयाय ॥ पापिषू हान स वा ह ॥ व व पूर्व हृत्वा या क
॥ क्रो जि मन दाद नाय रु ॥ प्रा हान समस्त निस्तु न या गो शुन ध ॥ को
॥ ॥ मृ ति थ उ वा व ॥ ॥ मृ हं न व न पा पिषू ॥ मृ न ग पा प क र्म ज्ञान
रु व क व प नि त्या गी सा पा पिषू न ना धि प ॥ जि पा पिषू म ष् मृ न ॥ ग क
मृ या हानं हाम मया क ॥ अर्द्ध मया क थ क्रो ना ज्ञा ॥ पापि क धाय ॥ ॥
प्र स्त व स द सं वा र्क ॥ य थ वा क नि वं द य ॥ न् सत्य सत्य मया ॥ उ कं म

म दीखन दीयन ॥ अ व स न स्व या र्जन खाजाया ॥ ग (थ) नि नि स वाः
वा ना ॥ अ (थ) ॐ ना प या दा नि न्द्र ॥ र ॥ वा द (थ) र्जन खाया ॥ र्ज दीख म
द ॥ ॥ मा बा टी ॥ कार्ति की वे व ॥ मा घी वे ल्म षी के सं थ ॥ स्नान दानैः
न क र्त्त वी ॥ सा पा पि ष्ट न वा धि प ॥ ॥ आ षा ट या पू लि मा क ॥
कू उ श बा न रु न रु ग्र ना यू व ॥ कार्ति क या पू लि मा ॥ कू कू क र्ति
का न रु ग्र ना यू व ॥ मा घ या पू लि मा क ॥ कू म द न रु उ ना ॥ यू व थ
न ॥ प र्ध का न स स्नान दान म या क क्का ॥ ना जो म हा पा पि ष्ट धाय

॥ ॥ य धि षि न ड वा व ॥ ॥ त्व व प र्ध म या दे व विं त त व
पू न ४ पू न ४ ॥ ॥ म म य रू वि था क त्वा स रू न त्व च द र्ग नैः ॥ म या
पू र्ज वि न्द्र र्ज व ॥ त्व द र्ग नैः अ ति थ र व त् ॥ :: ॥ ह ॐ न्द्र न दे व ता र्ज
न ॥ कू पा नि स्तै कू न पा ल ॥ वि वा ल म या दा ॥ कू न रु य रू व र्थ या
ता ॥ रु य रू या स रू न कं दा व ॥ द र्ग नि रु ता वि या मा न ॥ र्जै ष्ठा
न ॥ र्जै ष्ठा कू न पा ल अ ति थ ॥ रु या व वि द्वा कं मा न ॥ ॥ अ य
म स रू न य रू प र्ध म त्व च द र्ग नैः ॥ ॥ थ नि र्जै य रू स रू न

ॐ व ता य धूनी ॥ कु न पा न डा क्का थ क्का ॥ ॐ न म स या ॥ ॐ थ क्का
 ॥ ध का व रं कं न मा न ध र्कं ॥ ॥ ध न्य दं व म या प्रा फं ॥ पं व दं व म
 या प्रा फं ॥ पं व दं व व द र्ग नि ॥ त थ अ र्वं अ ल रू प न ॥ आ ग ता सा गृ
 हं म म ॥ ॥ हं दं व ध न्य प द वि थ नि ॥ ॐ न ला दा पं वा य न द व
 ॥ ता द र्ग न या दा ॥ र्वं अ ल रू प न ॥ ॐ हं या दा न स वि धा ना ॥ ॥
 ॥ किं लिं दु ना ना य ना य ॥ वृ क्का वि षू म हं न्य व ॥ त थ अ वा अ ल
 रू प न ॥ पि ता म गृ ह मा ग ना ॥ ॥ कु ल पा ल स ॥ ॐ दु ला व

क्का ला वि षू ला ॥ म हं न्य व न ना ॥ थ थि दं वा अ ल रू प न वि
 धा ना ॥ ॐ व वृ हं ला ॥ स थ अ दा व र्वं क्का न ॥ स थ व व न
 ॥ आ दं ग द य की ॥ मा ल ध र्कं य धि धि ॥ म म हा ना ना न ॥ ला हा थ
 ॥ ॐ अ न पा व वि धा ना ॥ ॥ वां अ ल रू प न ॥ ध र्म न का य
 ॥ य धि धि न या स थ स म र्म स्व या व ॥ अ ति रु र्ध मा न श या व क्का
 ला ॥ ॥ ध र्म उ वा च ॥ ॥ स थ स थ पू न ॥ स थ ॥ स र्वं न्म पु वि ज्ञ न
 न द ॥ म हं र्वं य पि ता पू त्र ॥ स थ म व य धि धि न ॥ ॥ अ य य धि धि न ॥

ॐ व व वा का य ख व ॥ समस्त भद्र गायत्रि वा ॐ नित्य य न ॥ २ ॥
ॐ व व वा का य ख व ॥ ॥ त्वया कीर्ति मय गृह्णता ॥ आ
नता हं गृह्णता ॥ यस्यार्थ यद्गृह्णता ॥ नृ हं देवा यधिष्ठिता ॥ ॥
॥ वृ न कीर्ति प्रतापत्वा देवा ॥ वृ न वृ या द्वा न सदा ॥ वया ॥ ॥
॥ अमन्त्राया अर्थ सयद्गृह्णता ॥ या ना ॥ पूष्य या ना ॥ डा मन्त्राया देवता ॥ ॥
॥ डा मन्त्राया धर्मा धर्म न्माद न्माद ता ॥ ॥ यधिष्ठिता वृ वा च ॥ ॥
॥ मद्य मस हं लं धर्मा ॥ मद्य मस हं लं तप ॥ ॥ मद्य मस हं लं ना र्थ ॥ पि

ता म गृह्णता ॥ ॥ व व वा य नि स हं ल ॥ य नि वृ ना र्थ या स हं ॥
ल ॥ व व वा य नि स हं ल ॥ ॥ मम कर्म रु व धर्मा ॥ यं देवा
दर्शनं रु व त् ॥ सर्वपाप विनिर्मुक्ती ॥ गृहिणी देव वे गृ वृ ॥ ॥
व व वा धर्मा य ॥ वि समस्त पाप न ता न तत्रा ॥ व व देव गृ वृ
वृ न पाप न वृ वृ वा या व ॥ ॥ पन ॥ धर्मा य नं ति ॥ सां य स्य न स्य प्र
वर्तते ॥ ॥ मला रु क्त ना र्थ ॥ नृ मृ कि व ल रु ती ॥ ॥ धन न वः
वा ॥ म व रु त क त व वा ॥ अमन्त्राया कर्म अमन्त्राया मति रु या वः

वानिव लाला म द फ्रं या लो रु द य व ॥ ध त न मू कि म रु व ल ॥ क र प
य ॥ ॥ ध र्म उ वा च ॥ ॥ य न द र्म प न हि सी ॥ य स ग स्य प्र व र्त्त
न ॥ अ लो रु क न लो र व ॥ ग ता नि मू कि ल क ली ॥ ॥ भ व या ध
न ॥ भ व या जी व अ नि ती न ॥ लो रु न म वे रु न य ॥ क्रा या वि धि न मू कि
वानिव ॥ ॥ सा धू सा धू वि जी व र्त्त ॥ स र्त्त स र्त्त ये व य रु व ॥ ॥ छि न
स र्त्त पृ ष्ठ ना य नि धि जी न ॥ ॥ रु य धि धि न रु न ता ॥ आ य वृ ष्ठि रु य
मा ल ॥ रु न रु व रु वा स र्त्त व य न क्रा ला रु न य रु रु व ॥ स र्त्त धि ली रु व

व ॥ अ य पृ ष्ठ रु न त व ॥ अ रु ना य रु न रु व य धू ना ॥ ॥ आ य रु य द
व ला क ष्ठ ध र्म वा क द या प न ॥ द व लो कं ग ता ध र्म ॥ पां जू पृ ष्ठ रु द
ध न ॥ ॥ दे व दे व या लो क सी ॥ थ धि रु द स म द रु न म हा क रु द म
न वि वा ल या दा व क्रा या ॥ ध वी क्रा या व ध र्म रु व वि धा ना ॥ रु य
द पृ ष्ठ ध र्म स म र्म ॥ रु मि स न ध व ल प मा ल ॥ ॥ ध रु रु वा म हा ध
व न ना न द का र्म ॥ आ य न स त ना दि न स म रु ॥ अ धि प नि का ना ॥ वे
म म्मा य अ धि न ॥ ना जा रु न म रु य का ना ॥ थ रु य धि धि न या क ॥ ध

मानसलं मूर्खं संयु ४॥ मूर्खलिखापदं सनदूषा मुनिनलनव दिव
तासंप्रयागन पतिगापवसीदति॥ मूर्खक्रीलिषांडपदं विरयं थकू दूष
मुियाकी वक्राह नलनतियको थकू वेविडा प्रसंगयायं थकू थतयागदा व
मवसानलाठावनी॥ ५॥ गुलिलिह सरसं प्रकृपे डिने ४ सरसं कथा कूलति
सरसि प्रत्ये कर्वालिमनावसीदति॥ प्रसंगयाय रसं गुलिक वल्वं फ्राय रली
झानिव प्रियाय कूलवैतका डा थथया कर्क मवसान लाठाववनं मरु
उन्मगानां दुर्गमनी मघपानी वदतिनी मुर्खं वाडा कूलानां वविमस
मिगतायूषः॥ ६॥ दायव विडा थनका डा किसिडा मुडा लागा डा थयता डा
विमस माययनडा डा थकं गा माय वन नी नन विहासा डा नाय न वेविम

सरविमसं यानन कर्तुमिच्छति सवृका प्रभू संरफ पतिन ४ पुति वृद्धन
ग्वर्कन वेविडा विमस माययन डा क्री सिमावा सङ्ग उवय कथं कृतिठानलि
क्रउनवायू॥ ७॥ धन धाने प्रयाग वृविद्या संग्रह लाषूव॥ माहान वयवहाव
पूयकलका सदा रवंत॥ धन साहा सयाय संथहन वा द्वा दूकाय संविद्या
सन नयसं वयवहाव सं थत स वाडा तालन माल॥ ८॥ नगु १४ सदनी मा
गान १४ सदनी पिता यस्मा नेति महा धान संसा वाद विदुस्म न॥ ग्वर्कया मा
मर्व ववर्व गुन दूस्म न संसा वहाडा समुद्रग वलपयक॥ १०॥ मागा गंगमस
मातीर्थ पितायूक्त वम वव॥ गुन कदा व समं तिर्थ मागा गंगम पुन ४ पुन ४
मर्कया मा मरुन नैगतीर्थ ववृ रनं पृथ वधया तिर्थ थं गुन रनं क

दानध्यानिर्धैर्यमाभिरुका ह्ययत्नयगं गच्छेत् ॥ ११ ॥ विद्यानूपकनूपात्तं क
मानूपतपसिना ॥ काकिलालं गच्छेत् नूपनानी नूपपतिवृत्ता ॥ कनूपयानूप
विद्या तपसिया नूपरुमा काकिलया नूपस्वत्र मिलाया नूपप्रतिवृत्ता ह्य
॥ १२ ॥ नयविद्यासमावंधू नयव्याधिः समाविष्टः ॥ नवापत्यसमस्त ह्य न
यदेवापनयनं ॥ सर्जनरुनविद्या ह्य रुनव्याधिः ॥ स्रुह रुनकाय ह्य
॥ १३ ॥ विद्यापुवाक्षिना मिश्रुताया मिश्रुतु ह्य भूव ॥ मातुनया
धर्ममिश्रु धर्ममिश्रु पनयन ॥ पनयनया मिश्रु रुनविद्या ह्य मिश्रु धवमु ॥ को
मीयामिश्रु जीवधायनयया मिश्रु रुनधर्म ॥ १४ ॥ इनाधीता विषयविद्या ॥ नजीवुह्य
जनविषय ॥ विषयमहीदविदुस्य व हस्यतनूनी विषय ॥ ताका ल मूल्या समया
तदाव सया विद्याविषयनं ॥ अजिभूतनयनया ॥ अनेविषय मूथमतासनरुन

वन्धनिगम्य विषययथाथ रुनकावल्यास्य कायाविषय ॥ १५ ॥ अनास्यास
रुता विद्यानित्य हासहता मुयः ॥ कवीर्यारुतकं रुत ह्य दोषरुता नृपः ॥ ता
कालं अस्यासमया तदाव सया विद्या हातरुय वलका लमदयकं ह्य नयनकावकि
खं हातरुय अयागप्यनकाव वखं हातरुय उ गतिनमतिनकाव नागा हातरु
रुय ॥ १६ ॥ यस्य पूजानविषयं हातरुनानवपतिग ॥ अंधकारं कलतस्य नयवदुव
सर्वनी ॥ गमक्रया पूज गममुमसव नूनमरुव धया कूलसर्व इमामदनाधि ॥
विदुस्य विनिव ॥ १७ ॥ सर्वनीदीपकं अन्धः प्रतापेन विदीपकः ॥ उलाकदीपको
धर्मसूपुत्रकूलदीपकः ॥ मातीयासाता वदुमारुनं दिनयासाता सूर्यरुनं उलाक
यासाता मर्त धर्मकूलया गमतामर्त सूपुत्रकाय ॥ १८ ॥ जनतायापनताचयमुवि
द्याप्रययुति ॥ अनेकातालयदाता पयवेतपितनस्यता ॥ थमरुमविवर्त थमपति

पातयाकर्म धनविद्यासंघर्षं नयमदलेनकवर्कं लयवेखलपूर्वकं धुतार्म
 ववृक्षय ॥ १९ ॥ गुन्याकावा नाजायाकावा अवकावायामा मथवमिद्रया आ
 वाथका ममममय ॥ २० ॥ लालयत्यववर्षाली दलवर्षालिताउयन ॥ संजा
 पीदलावर्ष पृथुमिर्द्रुसमावर्नत ॥ गवर्षाकायाकावादेता अवसूखन केयजिद
 ता कावर्षवैयजिमवर्द दतहावेव्यूडाकायडा मिगुर्षवैहनपे ॥ २१ ॥ लालना
 दहवीदाया लादना दहवीगुल ॥ तस्मानिष्यवपूर्व ताउयननुमानय
 कायमावा अवसूखनक्यायाकनीनमूनग दाषलनात कोवनवेयाकनाने
 मूनक गुलधुतनथवकोयथरुननिष्यरुनसर्न कोवनययमा लथवस
 खनकुपमनव ॥ २२ ॥ वादिनत्यासयोऽस्याता प्रह्वायाकिंप्रजाज्ञना ॥ तावत्
 यदिनत्यातांप्रह्वायाकिंप्रजाज्ञन ॥ गवर्षा विद्यासर्न सन्निमद मत्यासम

द्प्रह्वायनकुपयाज्ञन ॥ २३ ॥ प्रह्वायुविविधेऽन्मधुविद्याश्चानतर्तव्येऽनि
 तिह्वावृद्धिर्पन्नाऽतर्वति न्वनपूजिताऽ ॥ ह्वातेलाकन कायकायसवेय न्मधु
 सकाय न्मधुसवदाव लोकसमस्त्यनमान्ययाय ॥ २४ ॥ यथपूजकिमात न्मधु
 प ॥ १०१ ॥ तावदाहक ॥ १०२ ॥ पूजिता नाजा ॥ १०३ ॥ पूजदिनदिन ॥ वानकविधिस्थ
 वकायहाहा म्नासमनव न्मधु सदनकायकाय न्मधुसमनदाव सहाव
 हाहाहा वकुर्वय न्मधुसमसा नाज्ञानप्रज्ञानमान्ययायूदिनपमि न्मधुस्य
 नकायकायहात ॥ २५ ॥ गुणवृद्धियतायत्न किमाधोपेप्रयाज्ञन विद्विग्यतन
 र्गमहिऽगभवऽकीनविवर्जिताऽ ॥ १०४ ॥ सयत्नयाहन म्नापनेनव प्रयाज्ञन
 द्दह्वायनदहा ॥ १०५ ॥ नकायकायकानमूलमवाढ ॥ २६ ॥ सर्वत्यातवर्नदूपनू
 यस्यातवर्नगुल ॥ १०६ ॥ स्यातवर्नदूपनू ह्वातस्यातवर्नदूपनू ॥ मन्त्रावागिसा
 वथपूजमानस

म. रूपयाति सा गुण गुणयाति सा कान् कानयाति सा कमा ॥ २१ ॥ गुणं पृच्छ सिमा
 रूपं नीलं पृच्छ सिमा कूलं सिद्धि पृच्छ सिमा विद्या सागं पृच्छ सिमा धनं ॥ रूपमख
 तं प्रय गुण प्रकृतं कूलमखतं प्रय नीलं प्रकृतं विद्यामखतं प्रय सिद्धिं प्रकृतं धनं
 मखतं प्रय दत्तं तुका प्रकृतं ॥ २८ ॥ मगुणस्य हनं रूपं मगीलस्य हनं कूलं मसिद्धि
 मरुता विद्या मलागस्य हनं धनं ॥ गुणमखनकाव रूपखं हल हनं नीलतिनकाव
 कूलखं हल हलं सिद्धिमदतकाव विद्याखं हल हनं रूपं दत्तं तुकामदतकाव धनखं
 हल हनं ॥ २९ ॥ गुणं रूपं नीलं कूलं सिद्धिं विद्यां धनं ॥ रूपयाति सा हनं गुणं कूलयाति सा नीलं विद्यायाति सा सिद्धिं
 याति सा दत्तं तुकायाय ॥ ३० ॥ सुकृतयोऽयत्कन्या पूज विद्या सुयाऽयत्तयस
 जयत कुमिप्रधर्मा लियोजयत ॥ कन्यायाऽतलये हलं तिगु कूलस कोययाऽत
 य हनं विद्या गम कुस म क्रयाऽतलये हनं सायदास मिप्रयाऽतलये हनं धर्मस

॥ ३१ ॥ नात्पृच्छ नीलं नाम नृत्तिनि निर्मवसा गतं ॥ व्यवसायसहायानां नातिपा नम
 हादधिः ॥ उपाययातकावम रूपवर्तं उर्ध्वमश्वपातातवृक्षसवमरुवसाग
 मृदु पावयायजिव धनं नृत्तिनि निर्मवसा गतं ॥ ३२ ॥ मविद्धि दुन उका गयायमा ल ॥ ३३ ॥
 कनयतवर्धनपादनेका कनयनव ॥ मर्वधदीयसंकुर्था दानाध्वयन
 स ॥ मविद्धि दुन दिने ७ तिष्ठ ॥ क कृपू न गमक मद्रुव कुम्वतन गमक दिने ७
 तिष्ठ मविद्धि दुयायदानयाय ध्व ध्विने मृष्टादिन गमक ॥ ३४ ॥ याऽतनामसिह
 मालि उरुन्यानि पिपीविकाः ॥ मगद्वेत्तेन तं कापिषदमर्कनग कुति ॥ सासम
 दृष्टवान सा संपादिनी न योजन दोल विवाह ॥ १००० ॥ मवानसा गनृत्तनं ॥ पनाग
 कुं मवाद संपादिनि न गनृत्तनं लीह कथा ॥ ३४ ॥ गनेन धर्म गने विद्या गने पर्वत
 नात्पृच्छ ॥ गने धर्म धर्मकोमव व्यायामधर्म गने गने ॥ धनसाहाययाय विद्यास



पर्वतजायकायाय कर्मयायसंधरुनथकायवृत्तनयाहनयाय
यमतव ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
विनापलतन ॥ विद्याकायहनथपतनउदव मथवागुनृपुत्रपायाडा
काथमयासत्रपतस मथवाधनविस मथवाविद्यानविद्याहिन ३५ ॥ ३६ ॥
प्रदाताय यागुनृत्रातिमनय ॥ मनयानिगतगत्वा वांतालपिशाचत
उमृकनसदृकहनस ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
पावलिथ वांतालयाकं जायतपी ३१ ॥ पूरकः पुत्रयाधीननाधीनगुनृसन्नि
गं ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
जाविद्या गथधनसाशालया लोनदवमीवाथ ३८ ॥ निलिजे लमनालन
प्रदिगमिप्रसंगं मवोवरुननिविद्या पर्वतवाक्यानिविः ॥ सिद्धार्थया

वेदिकं मियाका मला सिमरुय कानिडा मित्रयाय मधुसयक धदाताधुनमृ
मियमरु मरुयतंजन ३२ ॥ नहिजननिरुक्तं रुक्तं गुणमृयात ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
मनंजातिपयादधिचतयथ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
लयपिकाया वदुधनिसयन पुमालथ ४० ॥ किंकुलनविसालनगुनवांप्रति
तानन ४१ ॥ धनृधनविप्रदापिनिगुलः किंकुलनिष्यति ॥ किंकुलनशयावच्छ्रया
जनममकंज्ञानगुलधुनं डाकं लाकनमान्ययायव ॥ काजायाकागच्छेय ४२ ॥
गुलिहृनडावच्छ्रयाजन ४३ ॥ किंकुलनविसालनविद्याहिनमुयान
कुलीनापिविवासादवनेनविपूर्धत ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
जनविद्याहीनकं ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
याय ४२ ॥ नावार्थवतवविद्यायावस्याननगच्छति ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

याकिं प्रयाजनं॥ विद्यारुननामडाउध॥ समुद्रपानयायमभूतालेनामलागल
 पिवसमुद्रपानधूनकावनामकुप्रयाजन॥४३॥ गुल्ल॥ सर्वकुपूषन्निपिरुवमा
 निवर्थकः॥ वासुदेवनमस्यनि॥ वसुदेवननगजना॥ त्रिभुवनसंगुलथकाय
 यागं॥ ववकायकं० धायमइ० गुलथूनननायायलत्वं समस्तस्यनपूजायागं॥
 थूनाननायायलसवववसुदेवचक्रस्यनपूजासयोगं॥४४॥ गुल्ल॥ कुर्वन्नि
 दूनत्वं दूनपिवलगासगां॥ कृतकीर्णधमाध्यायस्वर्यगकुनिषट्पदा॥ गुलवतर्क
 वसनपेसाधूननवसनपलैथरुनगायिनेवानसनं गथकठकीस्वानयानानः
 उमलरुगवाढथं मूथं लोकवानि॥४५॥ विद्यात्वंवनपत्वंवनहि० सुस्पवा
 क्रम॥ स्वदगपूजितोनाज्ञाविद्यासर्वपूजितः॥ विद्याम्भुसवर्कवनाज्ञाउ
 ल्यमश्व॥ नाज्ञाहर्नथवनाञ्चसशकपूजायायविद्यासवर्कहर्नगवानसनाज्ञा

नपूजानंमान्यमायव॥४६॥ पुकनापिसूत्रं विद्यायूकंनसाधूनाः॥ कृतपू
 नूषसिहनयद्रनेवपुकास्यतं॥ सूत्रविद्यावतसाधूयादावकूलसपूनेषसिह
 यादावगथेवदुसकिवलाथकीर्णपुकाणयाययुयकीवर्ककायनंगक॥४७॥
 विद्यायाः साहनेकचित्कचित्दुवस्यताहनं॥ उतयाहाहनकचित्कचित्नात
 यताहनं॥ गुल्लिहिनलोकविद्यासव॥ गुल्लिहिनलोकदुवयाथलाहला॥ गुल्लि
 हिनविद्यायादुद्वयार्थनगाथलाहलामइ॥४८॥ नमतिरुलिनावक॥ नमति
 गुलिनाज्ञाः॥ पुष्ककाष्टवमूर्खसिद्यतनेवमन्यतं॥ ससवसिमानंमव
 सिमानमस्कावयाक॥ गुलिककनंमवेनमस्कावयाक॥ गंठसिंथरुनमूर्ख
 कंथरुन॥ यनख्यमजिवतनपनकं॥ मजिवमूर्खलाकं॥ पुकावनमजिव
 ॥४९॥ नहि कर्माणि वलावि संधा॥ कालप्रयाजयत्॥ साहोवमेथूननिडाग

अस्वाध्यायमवव ॥ अथ ता संस्कारानसमस्तव नय मेथू द्रुतवयकंदनेप
 दय ॥ १० ॥ आहनाजायतवाधिगर्हकृ नष्टजायत ॥ मूलस्त्रीकक्षसध्याय
 सपाभदायूषकय ॥ ननसा व्याधि जायेनपिव मेथू नया तसा कृपुत्ररूपतपि
 देनसा ॥ लक्ष्मीमायू ॥ ममुपदका नसा मायूकय ॥ ११ ॥ वेदवेदांगतत्वज्ञा
 पहामपनायनी ॥ आनीर्वादिपना नित्य ॥ नृषना ॥ १२ ॥ पूनाहित ॥ ग्वर्क वा के
 लवेदवेदांगतत्वसर्व रूपहामक्रियासर्व आसिस्वाविषद्वेधधर्क ॥ नाजा यो प्राहि
 तयाय ॥ १२ ॥ प्रा ॥ १३ ॥ नि ॥ महीपा लक्ष्मिदुकर्मविवर्जित ॥ विधूनवपनित्या
 नी समदृष्टसर्वसर्व ॥ १४ ॥ आनीकामलपना ॥ मथून ॥ द्विद्ववचनमज्ञा क माप
 दावे ल सत्यानी ॥ शव सुखदुख ॥ तुल्यखद ॥ धर्क ॥ नाजा याय ॥ १३ ॥ कृतनील
 गु ॥ मयत ॥ सत्यधर्मपमायेन ॥ प्रवीण ॥ प्रसलादक नाजाधकाविधीयत ॥

कृतर्वत नीलर्वत गुणर्वत सत्यर्वत धर्मिक ॥ नि ॥ विवर्जित ॥ कामा मावर्त
 दयार्वत ॥ अर्थिर्क नाजा याय ॥ १४ ॥ कुर्नय सनिर्नल ॥ मप्रमर्क सदायर्व ॥
 मनाय वयक कर्तव्य नाधिपत्यनिया ॥ १५ ॥ काधि काम सनत ॥ शव ला ॥ लि ॥
 नि मशव ॥ मायमसी ॥ मययाक ॥ अर्थिर्क नाजा याय मतेव ॥ १६ ॥ मूलवर्क ॥ हि
 नाधीन ॥ सर्वनत्वपनी ॥ कक ॥ १७ ॥ वि ॥ मयवसायी ॥ वधर्म ॥ अका विधीयत ॥ वृका
 र्क ॥ शर्न ॥ डाकार्य ॥ सहित ॥ धीयर्वत ॥ समस्त ॥ न त्रयोपत्रिका या क नीलर्वत ॥ व्यव
 हातया कर्क ॥ धर्मिक ॥ अय ॥ १८ ॥ मायूर्ध्वदक नात्यास ॥ सर्वदृष्टि ॥ मदर्शन ॥
 मायनील ॥ गु ॥ मयत ॥ नृषवेधा विधीयत ॥ वं ॥ मदिन ॥ वेद्य ॥ ममु ॥ मत्यासमा
 क नाजी ॥ रुद ॥ वि ॥ क ॥ ला ॥ सव ॥ ला ॥ क ॥ डा ॥ तुव ॥ धर्क ॥ वेद्य ॥ अय ॥ १९ ॥ वि ॥ वि ॥ म ॥ महाद
 क ॥ १० ॥ ममु ॥ द्वा ॥ नि ॥ मृ ॥ पा ॥ य ॥ क ॥ ११ ॥ वि ॥ मृ ॥ क ॥ ठि ॥ न ॥ १२ ॥ वे ॥ स ॥ उ ॥ का ॥ न ॥ १३ ॥ म ॥ स ॥ त ॥ व

दृष्टा न्रीस्य विवकल, जलुगव पाकतिह, कथिनमरुवथथिर्कसवानयाय ॥ १८ ॥
 संकथुक गृहीता (थो, लघुसंज्ञिता ॥ १९ ॥ सर्वमनुसमाता की प्रपलंषक उच्यते ॥
 मृदुनत्वकवावर्क, वीनरुवमथसव ॥ मृदुनविपिलिं नाना ममसुस ॥ मत्स्यासयाक
 थथिर्क लखकधाय ॥ २० ॥ गीताकावतत्वद्वावल वाप्रियदर्शन ॥ मृप्रमादीस
 दादक ॥ पुतिहा ॥ स उच्यते ॥ ॥ कार्यया मृनृपसव, वनवत लोकव दुव प्रमादिम
 रुवविवकल ॥ थथिर्क पुतिहा ॥ २१ ॥ समस्त क नममृदु ॥ पंतिनयति
 ता मम ॥ (धेय्य (मेय्यग (मपत ॥ मृममका विधीयते ॥ सामथ ममृदु ॥ विव
 कल, पं वं (त्रिजय नयं रुव धीर्यव न मृनृपुलवत थुर्क मं ग्री धाय ॥ २२ ॥
 समस्त रुय ममृदु, वारुन वृपना जिता ॥ (मेय्य वी र्य गु (मवत ॥ मृम
 मका विधीयते ॥ ॥ समस्त म उ ममृदु सव थ मवेला न तिन क सव ॥ २३ ॥

वी न गुलवत थुर्क मृममवधाय ॥ २४ ॥ ममवी वाक्क उपाद्वा ॥ पनविला
 पला न के क ॥ धीनाय (म क वादी व प्रव द्वा विधीयते ॥ र्वा न ति ह दानी
 ववनय धृते न पन वा धना झा क धीर्यवत थुर्क दूत द्याय ॥ २५ ॥ पाथिवस्य
 वरुत्यस्य वदामि गुल ल कल ॥ यन संम्वर्द्धते नाशो र्वा ममवसु (थेवव ॥ जा
 गाव उमर्गवेन व, गुल झा काव स्वय उ मर्गवेन न वाशा स वृदि मानया नं उमर्क
 तं गानि धाय ॥ २६ ॥ मृत प्रव कूली नाना दया कूर्धनि संगुरु ॥ मृदिम ममवसान
 पिनत या स्यनि विक्रिया ॥ (थ सनि श्रयन, कलवत दयावत तं ग विधा ॥ मृदि
 मम मवसान सं विक्रिया मया क ॥ २७ ॥ पंतिन मृपुल ॥ सर्व मूर्ख दाषा मुकव
 ला ॥ त स्मात् मूर्ख सरु (गुल प्राद्वा मर्क प्रसस्यते ॥ गुल समस्त विवकन दानी
 दाख समस्त मूर्ख या क थुते न मूर्ख दा ल द्वा ॥ १००० ॥ ता म्माव द्वा नी दूर्क ल

यमाल ॥ ७७ ॥ प्रादु निया कमाने ननु सीति नादु प्रया उल ॥ यम स्वर्गनि वा
 सवृ पृष्ठ नव धनागम ॥ ७८ ॥ निष्कया के या नवा कार्य नाशया स्वता उल द्य
 रस को ह्नि द्वाय पन प्रस स्वर्ग प्राफि ह्यु ल श्री वृद्धि ह्य ॥ ७९ ॥ पूर्वनि यो कमा
 ने उ प्रया दाषा न ही पत ॥ मय ग अर्थ ना ग प्र न व क पत न कुर्व ॥ ८० ॥ पूर्व या क या
 र ले पा कार्ज स बा शा स स्व मा दा ष ल द य म्प र स क्ता य ॥ ल श्री मा य प न प्र स न व क
 व नी व ॥ ८१ ॥ तस्मा द्दु मी न्ध वा नि र्थ धर्म कामार्थ वृद्ध य ॥ उ ल व त नि या क र्क उ
 ल ही ल वि व र्ज य त् ॥ ध त न ग्य क्क ना शा न धर्म मर्थ काम वृद्धि या य न उ ल व त क्क
 या र ल य माल ग ल ही न तो ल त माल ॥ ८२ ॥ यत्किं वि त्क नू त ल्प नु र्वा य दि
 वा नु र्वा ॥ ते न स म्बु र्ज त ना शा स क ते इ स्तु ते व पि ॥ उ ल व त या र न पा न ध क्क न
 उ र्वा दा ने म्प त या दा ने ना शा या ल श्री वृद्धि या य ॥ ८३ ॥ यथा रु म प वि कृत
 ना य ता द न बु द ने ॥ तथा पू न्ध म प व क्क ल नी ल न क र्म ल ॥ ८४ ॥

२ वा

कृत्स्न दा स्य ता क द दा व प नि का या य् म्प क्क ल स्व ता व क र्म न ॥ पू न्ध प नि का या
 य ॥ ८५ ॥ द्वा त र्वा प्र क्क ल र्वा वी ध व ना ग म ॥ मा य क्क ल त र्वा मि र्वा ला य वि
 वि त व क्क य ॥ ८६ ॥ उ र्वा व न हि त ल्प य ॥ द्वा द्वा या व स र्ज न हि त ला य ॥ मा य दा स मि र्वा
 हि त स्व य वि पा र्क स म्प्री या हि त स्व य वि ष य म द त दा व ॥ ८७ ॥ र्वा ४ व द्वा वि धा वा
 र्वा उ ल मा ध म म य मा ॥ त नि या क्क त र्वा या द्वा वि वि ष म्प व क र्म ल ॥ ८८ ॥ उ र्वा वि
 न म्प न क वि वि ॥ उ ल म्प म य म्प म्प म्प य व २ या ॥ ८९ ॥ य स यो र्वा ल य ॥ ९० ॥ मा
 ल स म्प र्वा ल क्क ल स्तु य व ना नि न स ० ॥ म्प स तु म्प म त क्क य ल्प य र्वा ल य न ना वि प
 ॥ ९१ ॥ म्प ना नि क्क वि न कि र्वा नी रु था ॥ वि का न स तु म्प म श व त कि म रु व थ
 थिं क्क ना शा स्य ता ल त माल ॥ ९२ ॥ ल्प र्वा मि न म्प र्वा म्प र्वा क्क प न ल्प र्वा
 क्क य द वि ष य र्वा तस्मा र्वा क्क त ना ग न ॥ उ र्वा म श व क्क स्तु मि ता द त माल उ र्वा म

रुन सने कृप निरुन दाव कार्य ति मति मस लदाव धर्म ना जा ता उत मा ल ॥ १३ ॥
वा म ला य्या सु ता मूर्ख प्रष का वा न्नि वा न क ॥ निरुन वं ध्व व र्ण स्य ल्य रु द स्य मरु
सुखं ॥ विप नि स म त क कु मूर्ख का य द्यो या का र्य म पा क नि सा य ह न सु हा म द स
रु नं थ त ता द ता न म रु त्मा या सु ख द य ॥ १४ ॥ न क चि त्क स्य वि सि र्ग न क चि त्क
स्य वि नि य ॥ का न ल द व जा य त मि जालि नि पू व स थ ॥ मि द द धि र्व का न स
स र्जन द यूर्व का न स मि द व स र्जन व ॥ १५ ॥ रु यूर्व का न न द त दा व ॥ १६ ॥ का य्या थो
त र्ज ते लो क ॥ न लो का प ने मा र्थ ॥ व त्स को न क र्य द द्या प नि स रु ति मा त न
॥ का र्य या भू क र्म सा या व लो क व त र्ज ले य मा ल ॥ १७ ॥ न स सा सा वा न इ इ त्व
ने म द त दा व मा म ता उ ता थ ॥ १८ ॥ कू त य स नि ना नि डा मृ त्प स्य कू ता न ति ॥ क
त ॥ सो कं द वि ड स्य इ र्जन स्य कू त ॥ रु मा ॥ व स न स न त रु व र्ज या कू उ म द रु
कि म रु र्ज या न ति र्व म द ता स न र्ज या सु ख म द इ र्ज न र्ज या रु मा र्व म द ॥ १९ ॥

त स्म न स्य कू ता मा ना इ र्जन स्य कू त ॥ रु मा ॥ व र्ज या कू त ॥ सु रु ॥ कू त ॥ स र्व
व को मि नी ॥ र्व या कू मा नि र्व म द इ र्जन या कू रु मा र्व म द ॥ व र्ज या कू सु रु र्व
म द का मि या कू स र्व र्व म द ॥ २० ॥ इ र्व ल स्य व लो ना जा वा ला ना नि दि त व ल ॥ व ल मू
र्व स्य मो न त्वं वी ना र्ज म न र्ज व ल ॥ इ र्व न या व न रु न ना जा वा ल क या व ल र्व य
म र्व या व ल ना न म वा स्य वा न र्व या व ल रु ल मृ गु नि ति या य ॥ २१ ॥ मृ ना थ ना द वि
जालि वा ल व रु त प नि ना ॥ मृ न्या य प त ना ना स र्व र्वा पा र्थि वा ग ति ॥ नि र्ग ति या ता स
न या वा ल क या थ या र्ज ग म या त प सि या थ त या ग ति रु न ना जा ल ॥ २२ ॥ व्या धि
त स्या र्थ ही न स्य ॥ १३ ॥ ति श सि त स्य व ॥ रु द य सा क द ग्ध स्य सु रु द र्ज नि मो ष थ
॥ व्या धि न पी उ न र्प वी रु या ध न मा स्य वी रु या ॥ १४ ॥ व लो दा व वी रु या ॥ रु द य स
सा क न द रु न र्प वी रु या थ त स डा ष धी रु न रु ति रु न या र्वा न सा य ॥ २३ ॥ मृ नु व य
स न प्रो क इ ति रु न रु ति रु न ॥ मा रु दा न म न ना य सि रु ति स वी ध व ॥ ना य

रुस्यवानदास्यथरुन, शायदा रुवव न शायदा रुव व न स नयमदने, ल रुवका
रुदगदाव, ना रु सकृदृष्टि रुनदास्य, भगनसमीतदास्य, थनसविवा वया क
रुव व धूधाय ॥ ८४ ॥ तावगुडिर्मनूखा ल, स्नातव्यं सर्वकर्मसु ॥ ताव न युचिताका
का, ताव न इहितानना ॥ मनूष्या दू कर्म रुन सने, तावगुडि रुने, तावमा प्रगश
न ॥ ८५ ॥ नदवा विघत काष्ठ पाषाणेन व म नय, ताव व विघत्य देव सुस्मा रुवाम
हर्तन ॥ सिं स देव मद्, ला हा स देव मद्, वा स देव मद्, तावमा गुल द व रुन, थ
त मृथ न ताव खं तव ॥ ८६ ॥ लिष्या ल द व ता यार्था स्नानमा यार्थ द व ता, द व ता या
षिगां त ल उक्त, ल रुन द व ता ॥ लिष्या या द व, गुन, गुन या द व स्नान, क्रिया द व
थ व पूनूष ला क या द व वा क्रल ॥ ८७ ॥ विप्रं य स्पेय थ व क्रि ना यार्थ प स्प द व ता य
थिं प स्प रु थ मा ना, मिप्रं प स्प य थ स ता ॥ वा क्रल स्वय रुन, मृगि, थ, गुन मा
य देव थ, मा म सा य, य थि, थ, का य स्वय रुन, मिप्र थ ॥ ८८ ॥ गुन व मि दि जाति

नां व र्जनी वा क्र ल गुन ॥ पति व का गुन मुनि ल, सर्व स्या त्या ग ता गुन ॥ वा क्रल
या गुन, मृगि द व ता व रु व रु या गुन वा क्रल, मुनि या गुन थ व पूनूष ला क या गुन म
त्या ग त ॥ ८९ ॥ उल म स्या पि व र्जस्य नी वा पि गृह स्ना ग त ॥ पूरु नी या रु थ न्या यं सर्व
त्या त्या ग ता गुन ॥ उल म जाति रुन सने, नी व जाति रुन सने मृत्या ग त रु व न दा व य थ
या य थ पृजा या य मा न स्या सिन मृत्या ग त गुन ॥ ९० ॥ देव तां पूरु य र रु ल त्या दाने
न पूरु त ॥ सुड पूरु या प का व ल विप्रान म ति व द न ॥ द व पूरु न य ता व न, उ र्ग व न पूरु
न प दामे न रु ड पूरु न य, थ थ उ प का व न वा क्रल पूरु न य न म स्का व ल ॥ ९१ ॥ धर्म
स्य मूल ना ज्ञान, स्या मूल व वा क्रल ॥ वा क्रल य प्र पूरु न त रु धर्म स ना त न ॥
ना ज्ञा या धर्म मूल, वा क्रल या त य मूल मून ग्र या वा क्रल पूरु या दा थ य न ना
धर्म ॥ ९२ ॥ मा या ना तु ह त त धर्म, मा या न रु ल त धर्म मृवा ना रु ल मा प्रा ति म्मा या
ना स ल त क ली ॥ धर्म रु ल न प य क र्वा, मा या व ल, धन रु न न य य क र्वा, मा या न

समस्त ह न न प य क व सा वा न ल क ल ह न न प य क व सा वा र्ध न ॥ २३ ॥ ता श्र
ता जन न कि श्र न ति न कि र्ध न धि य ॥ वि त वा द न न कि श्र ना ल्य स्य न प स र्ध न ॥
न य ह व र्ध न या ता श्र न गि सा म र्थ ह य य व र्धा थ रु न प न म्पु ना य न प य व र्ध थ रु न
पु य थ ना व ॥ हा ता न ह य य व र्ध थ रु न वि कृ टि त य न ह ल ना य म ह ॥ २४ ॥ वा ल ये
व ॥ व न ध र्म मृ नि ल्य ख लु जि वि र्ण ॥ ह ल ना म पि प क्ता ना सा ल त प न र व न ॥ वा न
क र्ध र्म या य मा ल मृ नि ल्य स सा व सा ह न ग थ धा व सा क्रि म्भ स प द न प ॥ हा स्य
मा यि व ॥ २५ ॥ स र्द ल म्भ रु ता ध र्म का ध ने व र्ध न त प ॥ मृ ह र्ध व र्ध न र्ध न प्र मा द न
रु र्ध न ॥ मृ ह का ली रु न वा व ध र्म मा य का धि रु न वा व त प मा य ह र्ध म रु न वा व
ह न मा य प्र मा दि रु न वा व र्ध ना म्भ रु न रु य ॥ २६ ॥ मृ दी का म्भ रु ता हा मा रु ता
रु का न सा क्रि का ॥ उ प जी वा रु ता क न्या स्या र्थ पा क क्रि या रु ता ॥ म म्भु न वा व
ता म र्ध रु ल रु न सा खि म थ स्य न या मृ न रु न रु न व ना द म का स्य वि या क न्या

दान हल रु न थ व ता मृ र्ध न थ म पा ष या वा व न या मृ न रु ल रु न ॥ २७ ॥ दा वि ड्वा
धि रु रु वा नि र्ध न व ग ना नि य ॥ व दा उ ४ ह ल म ना नि त स्मा दान नि सि ष त ॥ पूर्व रु
स द स्य न दान म या वा ह ल न सा व रु म्भ स द वि ड रु न या धि न क ला २४ ॥ ख स ना व वि थ
न थ न दान पा य मा ल ॥ २८ ॥ पू ल का व व धा न थू प र्ण ग व र्ध रु न उ ४ ॥ ता ह ल रु म
न थ थ य व ध र्म वि रु रु ता ॥ ग य र्ध र्म स न ग ल म रु व मृ ध र्मि र्ध म नृ थ वा स रु
न सा क क ल थ रु उ स रु न सा म ल थ थ र्ण ता ह ल ॥ २९ ॥ ल्य रु र्ध न स र्ध न रु रु सा धू स
मा ग म ॥ कृ नृ पू ल म रु ना र्ण स न नि ल्य म नि ल्य ता ॥ मृ थि न स सा न सि स रु र्ध न प्र स र्ग ता
द ना मा ल सा धू रु न डा प्र स र्ग या रु न मृ हा ना प्र स र्ध र्म या रु न ॥ १०० ॥ ०० मि वा न क
सा न स र्ध प्र थ म ४ हा त क स मा फ ॥ म्भु थ य रु था वि र्ध न न रु ना नी ति व रु था
व दा थ य रु था वि प्र ० न वा ष्ठा न व रु था ॥ वि र्ध न सि या मि र्वा रु न म्भु ना ना या
मि र्वा नि ति वा क ल या मि र्वा ॥ व द ० न व रु न या मि र्वा व वि रु ॥ १ ॥ ना रु ध र्म नि ध र्म

रूपपापपापसमागम ॥ नाशाने इति वृत्ति स्यात्कथं नाशाने तथा प्रज्ञा ॥ ॥ नाशधर्मीह
 नसा प्रज्ञा धर्मीह यिव नाशपापिह नसा प्रज्ञापापिह यिव ॥ गथं नाशाने तथा प्रज्ञा
 होय ॥ २ ॥ उद्यमसाहसं तं धैर्यं वनं वृद्धिपनाक्रमः ॥ अतः तस्य निष्कृति तस्य दवा
 पिनां किं स्ति तः ॥ ३ ॥ उद्यमसाहसं धैर्यं वलं वृद्धिपनाक्रमं धर्मानसं यका
 प्रवृषत्वं तावदवसंत्वाचाव ॥ ४ ॥ अमोदानेन नरं दनं क्रमं लव वलं लव ॥ सर्ववृद्धि
 सहागक्रुधातनीयाननाधिप ॥ सामदानं रुदलपं मलिपातिवमुमावकं य
 नवनाशानधर्मी उपाययाहानं न क्रुमावकीमाल ॥ ५ ॥ पात्रं त्यागी गुणं नागी तागं
 पविशने सह ॥ अमुनाका नलायाका नृपतं पंचलकली ॥ स्यात्प्रसत्यागी रुयगु
 नसनागी रुय धवपविशने लंथनं ॥ अमुनवाधरुय नलसजाधरुय नाशाने
 रुय हाता ॥ ६ ॥ उत्तमः प्रतिपातेन न वलं दनया रुयत् ॥ नृधर्मपुदानेन सम
 उत्पयनाक्रमे ॥ ७ ॥ संप्रवृषकं या रुय नयं नमस्का नयाहव नलकं या रुय लपतं दन

नातिर्कया रुय लपे दामं उत्पयना रुय लपं नृपविनंतव ॥ ८ ॥ आनमिडपना विद्या
 विद्या विडपनस्य व ॥ एहं कर्म वं गानि पनतावं वल रुयत् ॥ ९ ॥ थवदाषनप्र
 वया तं विद्यमंतव ॥ नवदाषनप्र दतसा गथे निनिनका नसमस ॥ कोपत्यं इय कथं
 ॥ अयनपंतर्क ॥ १० ॥ मनसा विं तये कार्यं क्वसानप्रकासयत् ॥ मंत्रलकलपुत्राभा
 कार्या सिद्धिश्च जायते ॥ ११ ॥ कं कार्यं मननलापे मसिधता न ॥ ववनप्रकाग यायमत
 व ॥ १२ ॥ उपकाव गृहीतन नैरुना न क्रुमृदवंत ॥ पादलग्नकनस्तन कं ० कनेवकी ०
 कं ॥ १३ ॥ उचितया हास्यं न क्रुनया हा उचितं का स्य तो ॥ थमाल गथे धनसा कं ० कलकं
 ० न प्रगखं स्य विका या थं हानिपूवषन संहन ॥ १४ ॥ वरुदमि वृस्कं धन यावत्कानवि
 पजये ॥ १५ ॥ तथेवमागतं काले तिघा ल्यटमिवा भनि ॥ १६ ॥ थवविपलि रुववलसग क्रु
 दां धपा थं वृष रुय संपति रुववलसदां धपुला हासता ल रुया थं ता ल रुय हा रु
 न ॥ १७ ॥ रुजिर्क क उ क स्रुमधूर्ने किं नताप स ॥ मधूर्ने वदसिकत्या नी ला कार्यमधू

उक्तं नाशधर्मीह नाशपापिह नाशप्रज्ञापापिह नाशधर्मीह

नं प्रियं ॥ ॥ हं जि का स पा ल व व न क्का य न त रु या वा कू व व न क्का न म क्का या वा कू
 व व न क्का ल स म क्का ल क स उ क्का रु य ॥ ११ ॥ जि का (ग्र व स न ल क्की जि का (ग्र मि उ वा
 ध वा ॥ जि का (ग्र व ध न स्या पि जि का (ग्र म न र्द कु र्व ॥ ॥ ल क्की व स ल प वा नि व जि
 का स, मि उ वा ध व द पि र्व जि का स, र्व ध न स्य प र्व जि का स सि य र्व जि का स ॥ १२ ॥ प्रिय
 वा कू प्र दाने न, स र्व दु र्घ ति कं त व ॥ त स्मा र्त् द व क्का न र्थ किं वा कू पि द जि द ता ॥ ॥
 प्रिय वा कू क्का ल क व स म क्का प्रालि स उ क्का रु य थु न न व व न द जि द रु य म न व ॥ १३ ॥
 अग्नि दा ग न द (वे व म पु पा लि र्द ना प हा ॥ क उ द ना ना प हा नी च, ष उ र्ग आ ग ता यि न ॥
 म वा न रु व र्क, न स न व, म पु न अ प घा न या य वा द रु व र्क म व या ध न वृ व र्क थु न
 र्व क्का य ॥ १४ ॥ आ त ता यि न मं यां त, म पि र्व दं ग पा न र्ग ॥ जि धि स तं जि धा सि या न
 न न न व क्का ल व त ॥ ॥ थु पु ता स क्का ल स न र्द ता ॥ अ य ना धि रु न क व व उ र्व द से
 व वा क्का न श न स न स्या र्दा, उ क्का रु थु न म क्का द ॥ १५ ॥ वा कू पा ल य त नि र्थ स य

धर्म प वा प न ॥ नि र्जित ४ प न से न्या नि पु ति ध र्म ल पा ल य त ॥ ॥ ना जा स्यं ना र्क या य
 ध र्म स ल य या य थ (थ उ य न स ना रु य न पे जि व ॥ १६ ॥ पू र्व्य पू र्व्य वि वि न ति मू ल क्का
 न का न य त ॥ मो ला का न उ र्वा ग म नि रु थ रु ति सा न र्ग ॥ ॥ ना जा या मू ल रु र्द मा
 लि मी या मू ल (थ क्का न हा क २ उ थु य त व ॥ हा त र्व ल व रु द मा व र्क म त व ॥ १७ ॥
 अ नि मि उ मू दा सि र्द म थ ल्क वि वा गु न ॥ या न वृ थ ति र्द मा स व स र्व न स्य ति
 ॥ ॥ म क्का ड म क्का प ल न, मि उ ड मि उ प ल न, म थ ल्क म थ ल्क प ल न मि उ म क्का
 म स ल क व, थु र्क या, स र्व का र्ज ना रु य ॥ १८ ॥ अ ना य य य क ल न अ ना थ क न
 रु प्री य ॥ ॥ आ उ ल्य स र्व ल क्का व न न ॥ मी र्थ वि न स्य ति ॥ ॥ म नू थ न आ य म हा
 स्य य य या य य न क व ना जा म द र्द म स ल्क य य न क व ॥ ना य स ति द म नि द न न क
 व, थु र्क म नू थ म थ म य ॥ १९ ॥ क ४ का ल ४ का पि मा श नि क्का द म ४ क्का य या ग म ४
 क स्पा र्द का न म म कि वि ति विं ता मू र्म र्म ॥ ॥ क्का न ल, कु नि मि र्दि म्ब द म र्म

वव कुवाठ दुहा वव थमस दुन कि थविता वाने वावया यमा ल ॥ २० ॥ सि
 हाद के वेका देके सिष्य व लो वि कु कु गत ॥ वाये सा त्यं व निष्य व षट्स्वान नद्रि ति
 गर्द लात ॥ ॥ सि रुया के कु ता गुल सन वोहा नया के कु ता गुल सन खाया के प
 ता गुल सन कोख या के हा ता गुल सन खिवा या के पूता गुल सन गम धूया के ग्य
 ता गुल सन ॥ २१ ॥ प्र गुत कार्य म ल्या या न व ४ क तु मि वृ ति ॥ सर्व नै तं प्र त न का
 र्य सि हा द के वि धाय त ॥ ॥ कु कार्य भा नै त या त सन हु नै त म या स्य नी क र्ब ल प्र
 तु त प न न सन सि रुया के सन गुल थ दु ता ॥ २२ ॥ ॐ न्दी यो नि सं य स्य व क व ल्य
 डि ता न व ४ ॥ कार्य का ना प प न नि सर्व का र्या लि सा धे य त ॥ ॥ वा हा न थि गु ग्ग नि
 म नृ ष्य त थ म का र्य या य म रु ती ल प व ॐ न्दी नि गु रु या द रु य थ म का र्य या य रु
 त हा व कु का र्ज न या य थ दु ता गुल वो हा न या के सन ॥ २३ ॥ प्रा गु ल्हा न व
 प ड व स वि ता ग व व धू ४ ॥ न्दी य मा क्र म्य मुं जी त लि ष्य व ल्या वि कु कु ग

त ॥ ॥ स्र थ न व लै द न ल रु डा था ध न प क्का नि व न्धु ड ल्य ख न त्रि ता ग मा वा
 तो ना प गु क न प थ प ता गुल खा या के सन ॥ २४ ॥ गु ट नै थ न धू त ल्य का
 ल वा ल स सं ग्र ह ॥ मृ पु मा दि स्र धू ल व प व सि ष्य व वा य सा गु ॥ ॥ मृ थ न स गु
 ठ यू य व न स ड का य व ल स थ व ग्ग नि व धू वा व न प प्र मा दि म रु य स्र धू
 ल रु य थ हा ता को ख या के सन गुल ॥ २५ ॥ व को जी वा ल्य स डू ४ सु नि डा ४ गो
 धु व न न ॥ स्वा मि रु क थ ल ल ष ड न स्वा न ता गुल ॥ ॥ द त हा स्य मृ दि के न
 य म द त हा व वि ता य न स डू रु य के नी धु न द न नी धु ल डू उ न वा य के स्वा मि
 त कि रु य ल ल रु य थ ख ता खि का या के सन गुल ॥ २६ ॥ मृ वि ग्ग न व रु हा न
 नी ता वू व न न द ति ॥ स्र स डू हा ल व नि ल्य त्रि लि सि ष्य व गर् द ला त ॥ थ म या हा
 का र्ज म सि ष्य ता न म स व य म त व गी त ना य म ध य द क न स डू रु य थ स
 ता ग म धू य के सन गुल ॥ २७ ॥ वि न गी ता गुल ४ प्री का य पु क र्पा दि व रु

८४॥ रुद्रातिविप्रसर्वा मृगयश्चरविष्यति॥ धुनियता उल्लसन्मानधनन
 पुरुते॥ धर्ममनूष्य विवकल न समस्तमदुर्दकं॥ कृदवधिवधुर्कसुताने रुय
 लप मरु॥ १८॥ मूर्ख्यामनूष्याम मर्त्यसतफवतसा॥ पवस्य नोपकारे
 न प्रसारवतिविग्रह॥ मूर्खरुवर्क कानीलाकन निवर्थववनदकं वतस
 मावकि॥ पवस्य न मपका लया दन दुनि सा धृजनया विग्रह रुय॥ २१॥ नुकादव
 पथगी वा यैर्ययनिमहा र्णव॥ आसाधिता विनम्रति रुद्रां वपकि॥
 मान न्य मल प्यत उया द वा द से नृग मगल थववे विरुस्यता न वपनस्यमा
 का॥ थथथव वे विरुन का वताय॥ ३०॥ वा सने लीतिकृष्टि न यन के नापि स
 रुति॥ अरु वा नन एम पूष्टे॥ पूना दाना नथार्यथा॥ आयदा या द वा द स्य
 स्या॥ क रुद्र लर्प शोपदा तन नपे माल का वसक्राया॥ श्री नामस्य खावने
 पण्डगन साया क्रि पात द्वा व माक न व मिग्र या द वा व लया रुना॥ ३१॥ दूस्
 १ तले

न सागन तीर्त्तु समर्गवान नैवर्त्त॥ मरुतपूर्व नापन ए उर्व ध प्यसाग
 न॥ ॥ समरु रुद्र न कास्य विरुध द उ गम वन रुन॥ सने रुद्रक मगव मा कन
 माग्र न साग न समुद्र सत व ध या द श्री नामस्य॥ ३२॥ यूयं गत वयं पव
 विना धव पवस्य न॥ पव नाक्रममाने उ वयं पया लने गत॥ य विरुन ना
 शास्य ३३॥ धनहा का रुद्र सकल प्रकि र्क रुद्र कि रुद्र पनिहा र्क रुद्र कि रु
 पवस्य न विना धया द वा द मवन रुद्र रुद्र ना र्क न न सने॥ ते न या द व न सां र्क
 पति॥ दार्क रुद्र कि रुद्र या लिव रुद्र क प्रकि र्क माय माल॥ ३३॥ हित्या हित्या
 वम मालि रुद्रा वे विन सां तर्क॥ द्वातय ४ स मता यी तिय ४ पन ४ पन न
 वव॥ थ व द्वाति एम प्र र्क डा सरुन पता थ माल वे नी ला व या त साम
 मरुत द ल प मा व र्क रुव एम प्र पन रुद्र डा र्क रुद्रा य रुव॥ ३४॥ विंता
 रुद्र म नूष्या ल्म मन्मना मे थून दो न॥ मृमो तो रुद्रा न मुली ली व मुद्रा

मममातया द्वा ४॥ मन्त्र्याणां द्वयं विंता, गड्या द्वयं मेथून। मृगिया
जात्रे सोलाग्र मथून, वसुधा द्वयं नैलात्र ॥ ३५॥ मृग्या जना मे० नृष्या
॥ मन्त्रवाजिनं जना ॥ मृमेथूनं जना मृग्या मन्त्रना मेथूनं जना ॥ मन्त्र
या जना जने मृधवा मशय, गड्या जना जने वेलात्रे या दान मृग्या जना मेथून
मदयदाव गड्या जना मेथून जना दवा ॥ ३६॥ कृष्ण वृत्तिपना धीना कंक्षावा
सानिना प्रया ॥ रूतपूर्वार्थ संशुक्त ॥ सर्वकषादविदना ॥ मन्त्र्याणां कषूनं म
वया आदिन वर्तनं पयानं कषूनं थव आ प्रय मथुना वशान् द्याया सिनं कसूनं
न द्वा वद वधन माया व सिर्धना विदशय ॥ ३७॥ मृग्या नाया धिता मूर्ख पन वा सिप
न संवक्त ॥ जीविता पिमृगं पंच ॥ पंचनं ६४ खलानि न ॥ धन २ धर्कं केसूनं प
रुवर्क ॥ धा धिन पीउ न पं या दर्क मूर्ख मृग्या निमृ मवया द्वा सवा दर्क, थु दार्क म्याम्या
सिक्त ६४ खलानि धाय ॥ ३८॥ यायत्र निरपमायांति नुर्कं वापिदिने दिन ॥ सन प्रलभ्यता

यांति यदि लोक समानन ॥ ॥ गम्यं सा दिन पुर्ति इहा वकान नदाव द्वा नुव उत्य ध
नी जने सन दविदशय ॥ ३९॥ पनान्नं पनवमुया पनया ली पन मृग्या ॥ पन सव गृहवा
सा लकुस्या पित्रियं रूपं ॥ पन मृन्न नया व जिव नख नपूक्त पनव मुम गिस्पर्वा पन
पाल पन मृग्या सन न रुव पेन ॥ मृ सवा सया क थुन द्वा नुव उत्य या दवान सन ल मृग्या
य ॥ ४०॥ मृग्या ना निरु ना विर्धा मृग्या या पृष्ठ वालेन ॥ मृग्या ना विधवा ना नी, पृष्ठ
पोष्ठ पन लिङ्गिना ॥ विधवा जना दवा, मृग्या वीरुयू काय मदत दवा व मृग्या मृग्या विरु
य ॥ ४१॥ दिहवा ॥ सर्व पूषं न नग नी ना लि दहिना ॥ वांश लायि न वल्लभा य
स्यांत विपूषं धन ॥ समस्त सन धन ख पूजा यात न नी वद ह मखन धन दत सा
यांश लह न सन उर्ल म मन्त्र्या धाय ॥ ४२॥ धन मा रूप न धर्मा धने सर्व प्रतिष्ठित ॥
जीवेति धनिना लोक मृता यत्न धनानना ॥ समस्त या धन ख मृग्या रुत धर्मा
दिन धन न प्रतिष्ठा यादत न धर्त न धन धून मृग्या क धाय निधन रुत दवा नि

या नासुतांगन ॥ नापथादावशक क्वायस्व तावह तम ह्वावशानार्थवाहनं
 पूराक स्वाय ॥ १३ ॥ सक नावसर्व धन मध्वनि न्य पुतिह्मिता ॥ मधूकी वसमाव
 वि निवकिं मधू नायनं ॥ साखनरा खणी विहाव दथुसनिम्वयय थयातसमि
 कस्मिविय द्दु विय थथेन निम्व वाक् ग्धमदमह थ ॥ १४ ॥ पूरु कंष्वयाविद्या
 पनरुसमूया धनं कार्य क लेवसंप्राफ नसाविद्यानतधनं ॥ पृथिसवास्मिताया
 विद्या मवया कं वांधन कार्य कालमदं ॥ १५ ॥ दूनस्का निचमिशालि निस्त्रहान
 चवांधवांधवा ॥ किं प्रया जनकलव्य मचिकानिस्त्र नानिवा ॥ दूनसवां मित्र
 रुमद वासा ॥ दूप्रया जन वेतकालमदं वास्मिताया थ निस्त्र ल ॥ १६ ॥ मृदवाद्
 मपृथालि दूनस्का पिहिवांधवा ॥ कार्त्तवालव्यस्मिताय य ॥ कालनापतिस्त्रित ॥
 वनसवाक सि ग्धन दूनसवाक मित्रुथहन वनसमदं ॥ १७ ॥ प्रकाववनही
 नस्य कर्महीनस्ययानन ॥ निवर्धवतना लस्य रुग्मन्या रुतयार्थथ ॥ प्रका

मृदक्याववन आमसयाद्या वर्धवृद्धि नलिसद्यनलयाथ ॥ १८ ॥ द्वागय
 र्द अषिन्मर्द्ध दम्यस्या ॥ कवरुसुथ ॥ वात्वा नानिस्त्र लायानि पुताते मद्यद
 वन ॥ दृग्गुल्लोढो अषिलाकया मर्द्ध मि पूनवत्वा का सुथजावस थपता निस्त्र
 नशव ॥ १९ ॥ निस्त्र लाकपनसवा निस्त्र लावति वा पुन दाषसंरुक्मीलस्य
 प्रतिविप्रस्य निस्त्र ला ॥ कपनियाकं सवा नानियाक वसकाम दुषिया गीनवा
 क्कलस्य ददाप नाथ धन निस्त्र लश्व ॥ २० ॥ मृहिनधमदाजीक गृहं गमने
 सवर्जित ॥ पुतिकूल कनग्रवननकस्याप नाविधि ॥ लमदृष्ट ॥ इधविम
 द् पुपूखक्रिथ कवाव थननकविधि ॥ २१ ॥ वनय कूसजापास्त्र विनूपा
 मपिकन्यका ॥ नूपल्विनीनमी वस्य वेवाक्क लहलकूल ॥ द्वा निक्कं नलिदक
 लक्क कन्या स्वामतिंसा विवाहयापिव तिंसा नीवक्क मगव ॥ २२ ॥ विषादपम
 तं मक्कं मम धमदपि कविनी ॥ नीवा दप्यूलमाविद्या मुनिवत्तं दुस्त्र लायपि ॥ विष

सवानसं नृमत्तकायमालं नृकायमालं नीचकं चानसर्न॥ उर्लमविद्याशन
 दावस्यनेमालं श्रुकुलीशनसर्न॥ श्रीनृत्तकायजाग॥ ५४॥ कस्यदार्षकूल
 नास्ति व्याधिनाकोनपी॥ उत॥ कनतत्यसर्नप्राप्तिः प्रिय॥ कस्यनिर्वतनं॥
 ॥ स्रयाकूलसंघमद् व्याधिनसूत्रकं स्रनां इवमसिव॥ ५५॥ दाषाप्यसिगुण
 प्यसि निगुणेषापि जायते॥ सकूलस्यपद्मस्य नातोतवतिकर्कशी॥ दाषलश
 नं मद्मद्मद् गुणशनं मद्मद्मद् कामलपत्न्यानाचकर्कसं॥ ५६॥
 श्रमं तं लिखितं वेदं किं श्रमं तं किं वलाशनं॥ श्रमं तं गुणवतितायां श्रमं तं वा
 लतावितं॥ विक्रवत्तं मम श्रमं तं किं वलाशनं यश्रमं तं गुणवतां श्रीश्रमं तं मा
 वां प्रायाववनं श्रमं तं॥ ५७॥ इत्थं ताप्राकृतिवाली इत्थं रुद्रमुद्रमि प्रभु॥ इत्थं
 तावत्सुहृन्नामी इत्थं लववनं प्रिय॥ इत्थं तशनं प्राकृतववनं प्राय इत्थं
 तं क्रमावतस्यामी इति श्री लोका उक्तायाववनं इत्थं तशनं॥ ५८॥ नदीनां

जाकवील्लेष नाभीनीवपतिवृता॥ मनूष्यालं नृया प्राकृ दंशनां श्रुतिर्वति
 ॥ नदीदक्षसर्गं गच्छ॥ मिसाप्रतिवृता॥ मनूष्यं नो जा ल्लेष दंशदक्ष
 सन्धायनितिनवर्कं नृपथय॥ ५९॥ प्रयोज्यसमाकिर्षं दानीयाससमाक
 न॥ तायावितनं पृसा यथा वलं तथ्यगुरु॥ कायं कृयं वनत्वातिनिद
 तसर्न॥ श्रीमदतदावगर्थं गुं मर्थं वृशनं॥ ६०॥ सर्वेषां मवनेनामां श्रीयान
 तिमनूष्यमं॥ तस्मात्तदर्थं निवोया तया ल्यका धनं नकिं॥ समस्तं नृपासि
 श्रीनृत्तं उर्लमं धनं श्रीनालतावधनं कृपाय॥ ६१॥ कृपु इति कृत्वा निवृ
 पृष्टा रुच्यतं कूलं॥ कर्मग्री रुच्यतं नाजा नाकुर्वीत लह्यतं॥ कृवलनलमि
 सी कृत्वा वमावकि कृपुत्रं कूलमावकि कर्मग्रीन नाजा मावकि वृनवाक
 मावकि॥ ६२॥ श्रीनां दाषसहस्राणि गुणं श्रीलमहीमना॥ गृहावावसंतास्य
 लिमनलपतिनासरु॥ मिसाया दोषनं दावकि॥ १०००॥ गुणस्व इत्थं नाजा

दसकुडवादिनिदानयादा. कायव्यका. पूनृषसंसर्गवन थसुतायता ॥ १३ ॥
 कवेय४ किन्नपन्थि किन्नरुंति वायसा ॥ प्रमदाकिन्नवर्षकि किन्नरुस्यमि
 यपा ॥ ॥ पंडितनचुमखद कोखचुमनव. मिसानचुकर्ममयाक. थनकावन
 चुधर्ममन्वाक ॥ १४ ॥ पूग्रुयीरुनेलाया पूग्रविंउपुयाऊने ॥ हित४ प्रयाऊन
 मिर्द्र. सर्वमासपुयाऊने४ ॥ कायदयकेन. डीमाल. थवताविं५० यकयागका
 यमाल. थवताहितयाकतामिद्रमाल ॥ १५ ॥ समुद्रावनवमल. मिपाकानावनम
 नृला४ ॥ नरेन्द्रावनवमल. धनिजावनवमल. मिद्रय४ ॥ समुद्रनेद्र. पृथिपाका
 नलद. चु. बाजा. रुनेदलनदूव. मुहने. थववनिद्रलद. स्याद ॥ १६ ॥ नग
 लातिनवासा. निनपाका. नेन. वरुका४ ॥ नव. धनेवव. धोवो. स्वमी. लाव. कुलपु
 य४ ॥ ॥ कुया. प्राकाल. काया. ला. दा. तया. मद्र. वं. धया. दान. कून. मुह. कया. थव. मा
 वरुने ॥ १७ ॥ नदीपतयत. तील. ना. नी. पा. ती. यत. कु. ल. ना. नी. र्म. वन. दी. नी. व

स्व. दू. न. द. ल. ली. ती. ग. ति. ४ ॥ ॥ खन. तिल. के. दान. कि. मिसान. थव. कुल. का. ता. कि. मि
 सा. रु. व. स. र्ने. न. दी. रु. व. स. र्ने. थव. स्व. दू. द. न. व. न. व. प. ॥ १८ ॥ ल. ता. पा. र्म. स्थि. र्ने. व. रु.
 र. ल्या. पा. र्म. स्थि. र्ने. नृ. प. ४ ॥ पा. र्म. स्थि. र्ने. पू. नृ. प. यो. वि. त. द. पू. र्ण. ति. न. स. म. य. ४ ॥ ॥ सि. मा.
 क. स. वी. द. गु. वि. न. सि. मा. ग. य. बा. जा. न. थव. पा. स. यो. द. क. मा. न. य. या. य. मि. सा. न. थव.
 पा. ल. वी. क. का. य. नि. म्भ. य. ॥ १९ ॥ ॥ नै. व. प. न्ध. ति. जा. ता. धि. ४ का. मा. र्म. नै. व. प. न्ध. ति.
 न. प. न्ध. ति. म. दा. स. म. लो. म्भ. थो. दा. धा. न. प. न्ध. ति. ॥ ॥ वा. म्भ. ति. का. न. र्ने. म. र. व. द. का. मा. र्म. ध.
 म. र. व. द. म्भ. र्ने. का. न. र्ने. म. र. व. द. म्भ. थि. ता. न. क. व. क्क. र्ने. म. र. व. द. ॥ २० ॥ ॥ जी. र्मु. म. र्ने. पु. ली. सी.
 यी. हा. र्ण. वि. ग. त. जी. व. नी. न. र. ल्या. ग. र्ने. म्भ. र्ने. व. म्भ. र्ने. म. र. व. द. ॥ २१ ॥ ॥ न. य. रु. व. सा.
 जि. र्मु. व. न. क. मु. रु. न. सा. जी. व. न. व. त. दा. व. ति. म्भ. र्ने. रु. व. सा. स. म. म. न. रु. य. व. र्ण. व.
 क्क. ति. वा. यो. रु. व. सा. चु. थ. न. दा. व. दु. ति. ॥ २२ ॥ ॥ ल. की. ल. क. ल. ही. न. व. कु. ल. ही. न.
 स. व. स्व. ता. ॥ ॥ म्भ. पा. र्म. व. म. त. ना. वि. नि. जी. व. र्ण. ति. वा. स. व. ॥ ॥ न. रु. ल. म. द्या. क. वा. द. ल.

श्री कुल हीन या के वाद सन स्वती मृपा प्रकं या के वाद मु गत्य धन सा ७७ नु
 संपर्वत स वाग व काथ ॥ ८२ ॥ यस्य ता र्था वि नूपा की कस्ये ती कल स प्रो या
 ॥ उल ना ल न वा दी व सा ज नान ज ना ज ना ॥ ग्व कं या मु ह न वि नू पि नी उ ज
 उ न न वा य व च र्थि कं मु ज ना म ख ज ना म य ॥ ८३ ॥ यस्य ता र्था वि नू पा व ल ल
 न म न ग म पि नी ॥ नि र्ण म धू न ता पी व सा प्रि या न प्रि या प्रि या ॥ ग्व कं या मु ह न
 स नू पि नी प नू ष या न न वा व क्रि थ म धू न व व न उ क्ता क थ कं प्रि थ य म प्रि थ
 य ॥ ८४ ॥ यस्य ता र्था ग ह नि र्ण स नि व प वि ग र्ज त ॥ त स्य सी दं त म ग्रा लि प मि नी
 व हि मा ग म ॥ ग्व कं या मु वि र्वा उ छा थ न्या यि थ कं या स नी व नी गी न का न या
 प ल्य थ वानी य ॥ ८५ ॥ यस्य ग ह प्र ता र्था व प्रा न व हि त का वि नी व र्ज कं त स्य
 ग ग्रा लि ल क प के य थ न गी ॥ सूर्या मु मा म न हि त या हा थ हि त या य थ या
 ल नी न उ क्ता कं या व ड मा थ ॥ ८६ ॥ किं ज्ञा ते व ह ति पू र्ण ॥ म क सं ता प का व

के ॥ व न म कं कु ला ल वि य त्र वि प्र म त कु ल ॥ त न कं का य द या व द्वा य म क
 स ता प वि व र न वा व कु ल स ध न न पू र्ण कु क्ता न ग म क ॥ ८७ ॥ न क ता र्था त्र य प
 ग्रा ह स ले द ग ध न व ॥ क न्या का ला व ग म ने पि न र्ण या र्थ ति वि क्रि या ॥ मु
 क कं का य स कं वा सा न न व द्वा वा सा रि कं क कं वा व ध कं या वि का ल ला य
 म ॥ ८८ ॥ नू वा व स व पृ ग्रा ग या म को य दि व र्ज ग य र्ज वा म न्ध म धे न नी
 ल वा व ष म् त स जे न ॥ त न कं का य द न क कं ग यो वा नि थु न म न्ध म धे य र्ज
 या ता नी न थू सा उ क्ता ल ले प्थ य ॥ ८९ ॥ न के न नू क व क्ता द द्वा मा ने न व क्रि ना
 ॥ द कं त त ध ने स र्व क पृ ग्रा क ल य थ ॥ कु मा ग द हिं मा मि न व न व र्ण त प वि
 न व थ थ क पृ ग्रा न कु ल मा व कि ॥ ९० ॥ न के ना वि स व क्ता वृ थि त न स गं वि ना
 वा सि त त ध ने स र्व स पृ ग्रा व क ल य थ ॥ कु मा र्ण व ह न ना सा क न गुं त प ना सा
 क थ थ स पृ ग्रा न कु ल हि न क ली ॥ ९१ ॥ यस्य पृ ग्रा व सा ल स्या ता र्था कु द्या नू व

हृत्नी॥ वित्तवेषपिसं उष्ट्रः सग्नतस्य मही गतः॥ ॥ सूर्यां काय मुसिव कथं
वसा सवाद धन नग्न के थकाया थना स्वर्ग दुःखः॥ २॥ यं पूजास्तु पितुर्धर्म
सपिताय मुष्ठीं प्रकः॥ तन्निग्रयं नृविम्भसः सात्कार्यय प्र निवृत्तिः॥ ॥ ग्वर्कवव
या वसा सवीर्न थर्क काय धाय॥ ग्वर्क न नहि स्य गत थर्क वव धाय ग्वर्क पाक
न्यस्यार्त थर्क मिग्र धाय पुन धया वसा उर्क मु धाय॥ ३॥ यस्य जीवति द्वि
वृत्ति विप्र मिश्रा वा धवाः॥ स ह ले जी विर्न तस्य आत्मा थकी न जीवति॥ सूर्या
म्या ले म्या द वा नो वा क्र ल मिग्र वा धव या द न थर्क म्या द वा द या स ह ले॥
४॥ स जीवति गुल यस्य यस्य धर्म स जीवति॥ गुल धर्म विहीन स्य निरु ले
तस्य जीवति॥ सूर्या गुल धर्म न स वि क र व थका म्या क गुल धर्म म द र्क म्या द या
निरु ले॥ ५॥ वा वा स न स्व ती य स्य सा र्पा रूप व ती ग ति॥ ल श्री त्या ग व ती य स्य
स ह ले तस्य जीवति॥ सूर्या व व न स सं व स्व ती वा नि मु व रूप व ती स ति र न ले श्री

थु वा व त्या गी र्ने थका म्या द या स ह ले॥ ६॥ धर्मार्थ काम मा क य य स्य का पि
न वि ध र्ने॥ मृ ग ग ल न व ४ स्या पि नि न र्थ त स्य जीवति॥ ॥ धर्म म्थ काम मा क
सु नान थु य गा म ग ग ल प म्या द या निरु ले॥ ७॥ धर्म सत्य विहीन स्य दि न
या ति य म्क्रिया॥ स ला हा का न त रु व स्व न ना पि न जीव ति॥ ॥ धर्म कर्म सत्य
म दू या म्क्रिया न दि न व न॥ न्या क्र मि या व दू थ पि ना न ह य॥ ८॥ म ग्रा व पि
गु ल वा या दा या वा या गु वा व पि॥ यू कि प्कि म्थ वी म्थ न व वी गु व (ने व वा
त॥ ॥ म क्र या र न ग न गु ल व का य मि ग्र र्सा दा व र्वा॥ स ह गु टि क्का य म
ते व र्ने न म ग व॥ ९॥ म्क र्क र्वा व क र्क र्वा ग्रा ले के ० ग र्ने व पि॥ क र्क र्वा म व क
र्क र्वा ग्रा ले के ० ग र्ने व पि॥ ॥ म र्ने गु ग्रा ल थ का य म द का य गु क र्क र्वा ग्रा ल थ न
स र्ने॥ १००॥ ॥ ति वा न क सा न स ग ह दि ति य ग र क ४ स मा फ॥ ॥ का ले व नि
पू ना र्से धि का ले मि ग्र व पि ग्र ह का र्वा का न र मा सत्य को ले क प ति पं डि त ४

कोल रुगग्रवसंधियाय कावसमिग्रवविग्रहयु॥ कार्ययादान ग्मनि लाकन
 १॥ कोल ४ पवति रुतानि कोल संरुनत प्रजा ४॥ कोल ४ सफं भृगां गलि कोली हि
 दूवति कुम॥ कोल न प्रालिनिय कोल न दने कोल न दान कोल न पुं लकन जी
 २॥ कोना स्या नासुत वीरुं रुत कोल प्रवर्तते कोल ४ प्रवर्तते सृष्टि ४ पून का
 ला हि संरुनत॥ वे ल २ कोल स पृथय थव कोल न संसा सय॥ रुन कोल न मा
 वकि ॥ ३॥ खदि गम रुमि नापथ वडु की न ल मा वृता ४॥ सर्व संरुन त कोल
 स स्या कोली म रुत न॥ मा का न दि गम पृथि लेख वंड सूर्या प्र रु सं
 थ ग स म रु कोल न मा वकि कोल मृति त व रु न॥ ४॥ किं क विष्यति व का
 व ॥ ता य ग्र न वृक्षत॥ न ग्न क प न क ग्र म व रु क ४ किं क विष्यति॥
 कृयाय ॥ ६६ म द ल ला या व पृथि वि थ स रु का वि द्या य॥ ७॥ क द ली व
 न म ध रु व रु म न द प ना कुम॥ म वि व क रु न रु न गृ ल व किं क विष्यति॥

क लिव न स ग पा म् कृयाय म रु थ वि वा ल म रु थ स गृ ल व ग रु स रु व
 ७॥ प्र ल य हि न्न म रु दित व ति कि ल सा ग ना ४॥ सा ग ना रु द मि रु ति पु ल य
 पि न सा ध व ४॥ पु ल य को ल स स मृ ड न म रु थ म र्वा सा धू रु न न रु क या य
 व ल थ व म रु ता ध न न पा म रु पु ल य को ल स ग॥ म न्म व ति क ल्या त म रु द सा
 ग न स्य व ४॥ प्र ति प न्न म रु स लो न व र ति क दा व न॥ क ल्या त स म न्म प र्ध
 त व न न पू स मृ ड न थ व सि मा न म ध न न पू ८॥ वि द्य त रु वृ य प ला वि द्य
 स वृ क ल त प ४॥ पा नू य वि द्य त नी र द या सा धू य वि द्य त॥ मृ या क
 व प न द व वृ क ल या क त प द व नी य या क कृ क व द न द व सा धू रु न या
 क द या द व १॥ सा धू स न्मा न मी रु ल त व ति द रु वि क्रि या॥ ड प को न ग त
 ना पि रु रु न ४ के न गृ क र्ता॥ सा धू रु न या द मा गृ ल थ व ग नी ल मि य प ना ग
 व रु रु न या क म न रु ति त न या य म रु व १०॥ वृ ध वी ध्म नि न्म रु ति ना वृ ध

[illegible][illegible]

उमद ॥ १२ ॥ पन कार्य व्युक्ता स्मा न्न कार्य कि प्रसा धय न ॥ सू ह कार्यः
 पुनि वृ ह्नि नाज्ञा कार्य व्युक्ता मी ॥ ॥ मवया द्वा रुते तिथ्या यथ
 व कार्य रुने दाव तस्को नयाय मित्र कार्य निन्ययं याप नाज्ञा का ॥ रु
 वने नयाय ॥ २० ॥ ॥ रुने रेवे व नी वानी यम्कृती न न दम्भ न ॥ मवसा म सा
 धूनां नि सा नरेवे व ति ह्नुति ॥ नी वया के या दा कार्य सख सवा या थ सा ध
 रुने या के या दा का रु ल्वसा सवा या थ या नि ॥ २१ ॥ मसा ता माप द ॥ सी नि मरु
 तामव स म्प द ॥ ॥ त रे व म नू षी ष ना प दा ने व स प द ॥ ॥ त व या मा प दा
 द व स प द द व वि वा क्ता म नू ष या मा प दा म द स प द म द ॥ २२ ॥ ॥ रु
 रु धी नि ॥ ॥ रु के न व यु न ध ने व द्र मा ॥ वि ष ॥ ॥ रु न ल मा रु ल मरु ता क न स
 रु ॥ ॥ म सा द व रु के पा न न स रु रु या ये व रु स व न वि षु सी ना व स
 व ल मा रु म हा ति रु न स नी ष सा थ रु न न पा व ॥ २३ ॥ ले ष क ॥ ॥ ० क ॥ ॥ रु व

या या न्द्र म्म मु वि न्क का ॥ सर्व बाग नि ना म्म ठा ॥ क्रिया व न नृ प रि ति ता ॥ ॥
 वा क रु प द पृ र्क म्म मु म व प नि वा स नि द र्क ॥ क्रिया व न प रि ति त या क
 २४ ॥ ॥ रु ल म्म वा लि र्क वा रु स वा त पा व न ॥ धा नी नृ वा नि क र्क
 नि का त ना ॥ रु षि वा रु का ॥ ॥ ध द के धा र्क व न रु का य वा रु स वा
 न पा व न धा न रु नी न या यि का त न न का का या य ॥ २५ ॥ व रु ध ना र्था
 वा लि र्क वि धा र्था व व रु रु नी ॥ अ रु का ल म त्या र्थि मा ना र्था नृ प नि व
 रु त ॥ ॥ ध ना र्थि व न रु या यि वि धा र्था ॥ म न ग म्म रु नि पू जार्था
 अ रु का ल स ग म न या य व मा म्म र्थि ॥ न ना र्था या के रु य ॥ २६ ॥
 म रु प ध द ला का ल वा वा र्द न नी त ल रु द य क र्क स य र्क वि वि ध
 धू र्क ल रु ल ॥ ॥ रु थू प न प ति थ को म ल व व न वा क थ रु र्क या न
 ग ल क व ति थ ॥ रु स ता धू र्क या ल रु ल स य ॥ २७ ॥ रु रु न ॥ वि य वा

दीव तैव विष्णुसका वली॥ मधू प्रर्व नि जि की का ८२ क दि सा सा हल
विष॥ ॥ इर्जन द्रय को उक्ता य वि ष्म सम वि ता ल न ग ले सा ला हल
थ ॥ २८ ॥ खल सर्व पमाने न गुलि पन चिडा निपन्धति॥ शास्त्र ना वि
ख माग्रा लि पन्धि ना पि न पन्धनि॥ ॥ इर्जन न मे व या छिद्र नु का व रुः
क द र वा द थ व छिद्र न सा बाल व सं म र्वा कि व ॥ २९ ॥ दर्शन नी या श्व य मूर्खा धि
न वं त श्व नि गु ल ॥ इ न छ वि व द न्ध न कि नु का न् व पू षि ता ॥ ३० ॥ मूर्खा वि पा नि
रु लि व्य ॥ प्र त्य रु द्वि प द प न्ड ॥ ति घ न वा क्त ग ल्य न भृद श्र कं ० का य था ॥ ॥ मूर्ख
ह को तो त ते मा ल ने पा ड नि वू व प शु व च न हा न दा व के ० न क ले पू त म नू वा थ
वं था वि य ॥ ३१ ॥ स र्व ४ कु न ४ ख न ४ कु न ४ सर्पात्कु न त न ४ ख ल ४ ॥ मंदोष धि
व स ४ स र्व ४ ख ल ४ के ना प सा म्भ त ॥ ॥ सर्प डंक इर्जन द्रय क सर्प या नि न द

जैन, जंक, मंत्र डाषधान, सर्वशायजिव, दुर्जकुपायमजिव ॥ ३२ ॥ रुस्फीरुस्फ
 सरुपुन, गतेरुस्फन वाजिन ॥ गीनिमादलरुस्फन दगीत्यागनदुर्जन ॥
 किसिवदालदि ॥ १००० ॥ कूपाकंमाल, लउव लनदि ॥ १००० ॥ छदववजिकू ॥ १०
 दुर्जन डा, दलत्यागमादानतुनि, उवावपंदय ॥ ३३ ॥ रुस्फिनीकू, लरुस्फन, क
 सा, रुस्फनवाजिन ॥ गीललुउरुस्फन, खड्ग, रुस्फनदुर्जन ॥ ३४ ॥ ॥ किमिवमंक
 लज्ञान, लउव सागकज्ञान, छदवव, कचिज्ञान, दुर्जनव, खड्गज्ञान ॥ ३४ ॥
 दुर्जन ॥ पवि, रुस्फव ॥ लम, पुनाल, कृतायदि ॥ मलिनाल, कृत ॥ सपर्य, किंम
 सो, नरुयकन ॥ ॥ दुर्जन, कृकथा, गवर्दीनालतमा, ललम, कुषवसा, मलि
 ननुषवपाववीनसन, सर्ववम, गमाछापूना ॥ ३५ ॥ पात्रापाउवि, लषन, ध
 नृपन्नगयीर्यथा ॥ ललम, निगुवतकीव, कीनान्निगुवतविष ॥ ॥ पाउ, श्र
 पाउवि, लषन, छाछासाववीवथ, छासनका, नसायाक ॥ ३६ ॥ वय, ३६त्यन

को न विषयवयु विद्याक ॥ ३७ ॥ के दु ग क्र मि नि म त्वा ना प ष्य त क दा व न ४ ॥
 को ल द र्शन मा या ति ल ल ल व क्रि वी र व त् ॥ ॥ वि वा न क्र ध कं रु लू क म तं व
 वी स दौ स मि त या ल्थ न न वा स्य व य ह व ॥ ३८ ॥ ष ष्ठी क क न कं दा षा म गी ति र्म
 धू पिं ग ल ॥ ग तं का न च षा द व कृ कृ स्था न न वि द्य त ॥ ॥ षू य ता ॥ ५० ॥ या ल या
 कं दी र व व य ता ॥ ६० ॥ से यू मि र वा या कं दी र व म न द्धि ॥ १०० ॥ का न या क ख न या क
 धू सि या कं उ ली थू ली म द् ॥ ३९ ॥ स्था न कू ट द्वा वा न मे गी स्त्र हं प वि ल कृ त
 वि न्ध स स म यं का या वि ना ल मू प ग द्धु ति ॥ ॥ थान स वा क क प ति दू ला ग्धे
 वि मि द्र स्त्र सा ता ल तं मा ल क्कान ध न सा वि न्ध स या त द्वा व का र्य ना ण या
 यि व ॥ ३९ ॥ मृ दू ने व मृ दू हं ति मृ दू ना हं ति दा नृ णं ॥ ना सा ध मृ दू ना किं वि
 त स्मा र्त्त कृ त ना म द् ॥ ॥ ना यू व न क्का उं मा व कि क्का कं मा व कि थ रं न
 ना यू सा ध न य म जी व क्का क या सि न क्का क थ य ॥ ४० ॥ व न प्र दू लि ना व क्रि

दहं नमः सा निव कृति ॥ समूलमूलमूलययानि मृपोद्यामृदमीतली ॥ ॥
 उ सखास्यं रुयामेन नयावनि हाईकनद तव नाखवनकाव ॥ हीतयं माव
 किथतेन नायिगीत नकाक धाय ॥ ४१ ॥ स्कुलनामावली वर्द्धकन्यावव
 रुताविली ॥ उषमातिवदुजालि ॥ दूबत ४ पत्रिवर्जयत ॥ ॥ संतवपूर्ववा
 प्रिसा, म्भययववृथुत, ताततमाल ॥ ४२ ॥ नरुस्यते दये नृन्य पनदाषा
 नृकिर्त्तनं ॥ कलरु ४ प्रकृतिं वेव इतत ४ पत्रिवर्जयत ॥ ॥ उपतखं पितव
 पे नृन्य क्लार्कथर, मवयादाषक्तात, रुर्व ल्वायडुयडा ॥ थुत ताततमाल
 ॥ ४३ ॥ मृषयानं गडी नमला गव ल्बुव प्रसृजिका ॥ नथीत पृनवालीव दूब
 त ४ पत्रिवर्जयत ॥ ॥ लउगय किनिमर्ल रुव, यावडासा, नाजायाप्रिसा ता
 थुत ताततमाल ॥ ४४ ॥ दूर्जनैव सदा मित्रं पनस्वामि वना फुय ४ ॥ (गजीर्ष
 वमुजी लुं व दूबत पत्रिवर्जयत ॥ ॥ दूर्जन वृत्ति मित्रं पनपू नृषयाक वत

रुवर्क मु, जी चिसा, जी लु वरु वमु, थत ता उत माल ॥ ४५ ॥ न वि न्व स द मि
 प्र मु मि प्र वा वि न वि न्व स त ॥ क दा वि न कृ पि ना मि प्र ४ सर्व गु र्क प्र का स य त ॥
 ॥ वे वि व वि न वि न्व स म त व, मि प्र व म त व, मि प्र त म वा ल हा व, स म स गे
 फ र्व पि न यी, स र्व वि न्व स म त व ॥ ४६ ॥ न वि न्व स द वि न्व स, वि न्व स ने व वि
 न्व स त ॥ वि न्व स हा य मृ त्य न, मृ ला द व नि कृ कृ ति ॥ ॥ अ वि न्व स हे क या क वि
 न म त व ॥ वि न्व स या हा थ य स त य जा य न वि व ॥ ४७ ॥ न दी नी व न री नी व, नृ नि
 ना न मु या नि ना, वि न्व स ने व क र्क बा, प्री वृ ना ज कू ल पू व ॥ ॥ न दी व, न
 सि ना ला क व, हा द व व न मु जो व, प्री व, ना जा व, थ त स व, वि न्व स या य म त
 व ॥ ४८ ॥ न दी ति व र्ण य वृ का या व क न्या नि ना य या ॥ सा म त व हि ता ना जा, न ह
 वे नि वि ना य ४ ॥ ॥ खू सि या द सि मा आ ध न म थू ल मि सा, मं प्रि म दू ना जा, थ
 त, ता न्वा य म दू ॥ ४९ ॥ यदि वृ त्ता स्वी त प्री ति, जी लि त प्र न का न य त ॥ यू त म

थ प्रिया नं व प्र ना कृ दा न द र्ज न ॥ ॥ प्री ति ता उ य क य व र्क, थ स ना ता ल न
 माल, रु ल म ला य, ध न वा ला न म या य, म व या प्री व म रु य, थ त या य म त व ॥
 ॥ ५० ॥ न ग कृ दू र वि न्व स न कृ र्णा कू ल वि ग्र ह ॥ आ ल ना वि त थ का थ, मि प्र व
 न का न य त ॥ ॥ इ व वि न्व स म त व, क प न वि ग्र ह म त व, थ म का वि रु य म
 त व, मि प्र व वे नि मा य म त व ॥ ५१ ॥ कू ले य म प्रि ना ज न, वि प्र व वृ ष ती प ति ॥ प्र
 वा डि नं व त उ र्व न स र्व नि ना दा वृ धे ॥ ॥ कू नि ति म प्रि या ना जा, पू न ही न
 प्री वा क न, प्र त र्ग स न्या सि थ त स नान स व न प म त व, आ नि रु न न ॥ ५२ ॥
 कू मि प्र ना सि वि न्व स ४ कू ला र्था र्थी कू ता न ति ४ ॥ कू ना य ना सि नि वृ लि ४ कू
 द ल ना सि जी वि त ॥ ॥ कू मि प्र र्क व वि न्व स म त व, कू प्री या क व ति या व
 म दू, कू ना र्क स न व त म दू, कू द न स न्वा य म दू ॥ ५३ ॥ ना सि स र्व स दा यो न
 ना ल्पे व वृ ष ती प ती ॥ म य य स दू वि द ना सि यू त का ल प्र य न हि ४ ॥

ख्याक सखमद् सुत्रिनीयापुनश्च ब्राह्मणयाकं होवमद्, थनकोवयाकं सु
 हतिखामद्, रुवालयकं, थस्वर्गामद् ॥ ३४ ॥ होवि होविप्रमग्निं च दम्पया लो
 गुनलिषया ॥ ३५ ॥ मृतं नैव गलया, रुनस्य वृषतस्य च ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणनर्कस दथ
 वानमर्गव, गुनलिषव महादव थसाव, थतया दथ वनमर्ग ॥ ३७ ॥ लोकया
 ग्राहय लजा दकि ध्यत्यागणी लता ॥ ३८ ॥ पंचयज्ञनविद्यन्, नकृप्या लुप्रसंगति ॥
 लोकयाग्रा मृतयविव, ना ज्ञातवत्यागी, थहा ना प्यथय समदती ॥ ३९ ॥ आयसस
 नाप नावकं मर्गव ॥ ४० ॥ नांजने शुक्रा गीर्थाति, नवेकस्यैव रुग्णं ॥ ४१ ॥ ननावीहि
 नवृद्धिः ॥ ४२ ॥ नैव पूर्वः स स्मृतं वदत ॥ ४३ ॥ मृज्जनतायिकमजिव, मिसायाहि न
 वृद्धि मद्, पूर्व याकं प्रकृत तासे मद् ॥ ४४ ॥ मलसंधाग्निसंघश्च, व्याधिसंघ
 स्तुल्येव च ॥ ४५ ॥ पुनर्वर्द्धयतयस्या, लस्या वृषनकावयत ॥ ४६ ॥ तिनसंघ मृगिसंघ
 व्याधिसंघ, थतया संघदयकं मर्गव, थत संघया पूत मद् ॥ ४७ ॥ उद्धगकल

रु४ कंदू, धृतमध पनक्रियः ॥ निद्रामेथूनमालम्भ, सवत गहिवर्द्धन ॥ ४८ ॥ रुता
 स, रुन, कंवाव, वास, रुनलाय, प्रवयाका बीया कंरुय, रुन, मथून, मला
 स, थतया संवनपयं वादनयिव ॥ ४९ ॥ पनदानापनस्ववे, पविवादपनस्य च
 पविहासं गुनलान्, यत्नतः पविवर्द्धयत ॥ ५० ॥ मवया, मृ, मवया खासगतिथ
 मवहासया यथतया, गुनया कंठानं ताडन माल ॥ ५१ ॥ पना कं कार्यं हितं न
 प्रत्यक्षप्रियवादिनं ॥ ५२ ॥ वर्जय लादणी मित्रं विषकू लययाम्खं ॥ ५३ ॥ कं विव
 नकार्यमावक, कं वन, उका उका कथं थिं कं मित्रं तालन माल ॥ ५४ ॥ उधनस
 रुनपूयातया ॥ ५५ ॥ कं दं वकू लिव, कं लाया कं नदिस्तथा ॥ ५६ ॥ कं डव
 यकू ली वं, वर्जयत्यंति तसदा ॥ ५७ ॥ मतिददं, मतिं, वृत्तिथय, मतिं वनि
 प्रमृ, मतिं, मतिं, मतिं, मतिं, थत दानि कं तालन माल ॥ ५८ ॥ उद्धनी
 यदि रूपं नैता यदि ति नालमा ॥ ५९ ॥ मपा ली मेनिका ॥ ६० ॥ वं वर्जयं, नीया पनक्रि

यः ॥ उर्ध्वली, मृषसापनि वलाति नो लमा, (मया ली मे नि का^धर्थे रूप
 रुनसर्न, मवया का वा रुनदाव तोल न मा ल ॥ ५३ ॥ येषु कार्येषु विदुषु स
 रुसा विदु लो दयः ॥ विपलिषु मसादानः पत्रिवर्ज द्विवकलः ॥ ॥ सुनानं कार्य
 सतं दयानं तत् कलन रु सदन सनी ॥ विपलि वन स मसादान रुनदाव थक् वि
 व कल तोल न मा ल ॥ ५४ ॥ तका तका समं यस्य कार्या कार्य वदु ल्यता ॥ सदा का
 र्येषु सदा रुत नय सर्वदा वृद्धे ॥ ॥ तका मृका सायाव कार्य, मृकार्य उल्यया
 य ॥ सदा कार्य सदा रु सग्नय जा ग्ध सदा द्धानि रुक स्पन ॥ ५५ ॥ त नय मकु लिना
 ना ना जा पना प जी विनी ॥ त नय द्धान नक्र ना कृत्वा पूर्वा प का वि लभ ॥ ॥ कल
 मति न सन मवया जीवनी नस्प वाद याद वा जा व ॥ द्धाय जा ग्ध पूर्व वे विव ग्धा
 य मा ल ॥ ५६ ॥ पाद पाना तय वा नः पद्मा ल निलि कार्त्तय पर्वताना तय वद
 रु उना द्विपदा लय ॥ ॥ सिं मा या तय रु स पत्यया तय निलिन का व व न दा

व पर्वतया तय मना रु उया लय मनुष्य ॥ ५७ ॥ मागा यं दि विव द द्या पि
 ना वि क्रिय ते स ते ॥ वा जा क नी ति वा न्याय काम ग्रा त त विषयि ॥ ॥ कदा विन
 मा मन प्रसन कि ववून काय मियू ज्ञान म न्याय या त दा व थ व न स रु न स न
 पू स रु व ॥ ५८ ॥ यत्र वा जा स्वयं यो न समं श्री स पू ना हितः ॥ ग ग्रा ह किं क विषा
 मिय ती न का त ता लय ॥ ॥ ग्व गु लि द ग्ग स वा जा थ म थ थ म र्व ॥ म र्व र्व पू ना
 हित र्व रु न दा व थ थ थ य स रु न वृ या य ग ना न व का या य मृ नी लय रु व ॥
 ५९ ॥ विधा ता लिखि ता य स्य लला ट के व मा लिका ॥ देवा पि न कि हि ना का ति स
 मा र्य लिखि त्र पू नः ॥ ॥ विधा ता स्य का सा त स या या व रु या म्मा ख ल दे व नी लि
 पा त स कृ य वा य म रु ता ॥ ६० ॥ कर्म लो हि पु धन न वृ डि नी किं पु या रु
 न ॥ पा पा स्य कृ ता वृ डि रु न द वा त विषयि ॥ ॥ कर्म पु धन वृ डि थ ना व
 द्धानि रु या व द्धय ता नी म रु न दा व ल्हा सा या ग ल वृ डि ग ना द्धान थ न द व रु

य ॥ ११ ॥ कर्मलक्ष्मि विप्रधानानि सन्निवृत्तं नृपसु ॥ वनिषु दललप्रपिजा
 नकी ॥ १२ ॥ खलुगिनी ॥ कर्मतागप्रमाल तिगुवेलास नृपसु यादाकार्य
 तागमदृक् यामदृग्गथेधनसा वनिषु अविधिं दृक् ॥ वियालप्रविवाहयात्य
 गीता ॥ १३ ॥ खलुगिनी शर्ल ॥ १४ ॥ सानूकूलतवे लक्ष्मि दाषापिउलसंरुति ॥
 ॥ १५ ॥ लक्ष्मिदाषतायांति वकी लुतविधातवि ॥ ॥ सानूकूलसतिनदाव दाष
 यालं गुलदृक् मूढाववय ॥ विधाताविमूखरुनदाव गुलयात्यदाष रुय ॥
 ॥ १६ ॥ किंकनोतिनव ॥ प्रादृष्ट प्रकमान ॥ स्वकर्मति ॥ प्रायलेवमनूष्यानी
 वृद्धि ॥ कर्मानूसाविली ॥ ॥ दानिकं मनूष्य रुकया कृपय थव कर्मन द्याया
 थयमवमग्नक वृद्धि रुयिव कर्मयातिव ॥ १७ ॥ ॥ रुस्य रुषली दानं स
 त्यं कं ० स्य रुषली ॥ प्रतं व रुषली कं ० रुषली किं प्रयाजनं ॥ ॥ लातातया
 लतातादालयाय ॥ तिसाशनं का ० या लताशनं सत्यकाय दू सपातया

लताशनं धर्मखादनेतिसां तियायादू प्रयाजन ॥ १८ ॥ वविर्गु रुषली
 मुदीलं द्रुमां पृष्य रुषली ॥ स्वदति रुषली पृसां पतीनां रुषली रुपा ॥
 मुदीयाखलाशनं सुवनिप्रशय ॥ हिंसाया खलाशनं वृहास्य वानं मिजनयाख
 लाशनं सुदतिनदानं स्वाभिया खलाशनं दयावंग रुय ॥ १९ ॥ नरुप्ररुष
 ली वं दाना नीलं रुषली पति ॥ पृथिवी रुषली नाजा लीलं सर्वप्ररुषली ॥
 चाक्रसया खलाशनं वं दामा मिसाया खला पूसमी पृथिवी यासाता नाजा ॥
 समलयासाताशनं सुली वरुय ॥ २० ॥ मरुत ० यवि रुवं ॥ ० ० ननी वान्मानमरु
 मं ॥ कं साविव नलाघात काली जस्य विरुषली ॥ ॥ तवनयादाशनं सा भमानति
 दनी वरुय यादाशनं दाव मानयातसनं प्रतिद गथेधनसा कृष्ण सन कुतनत
 नतयानं कालिनागयाल्ले लाशनं ॥ २१ ॥ ॥ विरुमिगर्ततायं गुविर्नामपति
 वता ॥ ॥ विरुमापनी जा संताषी वाक्कल ० सुवि ॥ ॥ सुसवीं लखसुविः

मिसा रुवसा पतिवृता रुनका वसुवि, कुमावंत नाजी नुवि, सतावि वाक्कल
सुवि रुने ॥ गते ॥ अविर्ह मिगती तार्य यग्र लपान विद्यते ॥ लेय स्काने पत्रित्य सु
न्य स्काने अविः ८ नुविः ॥ ॥ वं सर्वोयामद लेखा द लेख नुवि अय वायाभ
य सताउ ताव म ने वदि, सुवि ने सुवि अय ॥ ६० ॥ रुस्मान् अछत् का धी ताप्रम
मून अछत् ॥ वज्रसा अछत् नात्री नदी वगन अछति ॥ ॥ ननिन वूयाव की ज
अध्याय सिङ्ग नरुं ज पाद् न वूया व नुवि रुयिव मासिक न मिसा नुवि रुयिव
खवे गन छा तदा व नुवि ॥ ६१ ॥ पिडु ने त पूर्ण दद्या न्ना दु र्दद्या न्न हान सी ॥ एष
वात्म सम दद्यान् स्वयम् सर्व कृषिं बुद्धं ॥ ॥ व वूया के नान श्रीरूप वियू मा मया
के नान ली जन सविय साधा के नान थे मव समन विय थ मथ्य थर्म कृषिया नवन
॥ ६२ ॥ कपिला की नपानेन वाक्कली गमने नव ॥ वेदा रुन विवा ने ला सग्गडा
नवर्क बुद्धं ॥ ॥ सियू सायो इइ खदान वृक्षली प्रसंग यादान वडा रुन

विद्यानयादान शुक्लसूदनवकवनीव ॥ ८३ ॥ शरीरसंख्यातुक्तं मासभ
कनिर्गतने ॥ जीवमानाहर्वचुद्रा मृतः स्वानश्रुतायते ॥ ॥ सुलीनियाला
हातनलक्षितादिथनवदाव शुक्रोवाक्कलम्बास्वासडश्य सिगडावखिवा
श्य ॥ ८४ ॥ स्मनहीनाउद्यानामी घेतहीनकुलाजन वपुहीनमलेकार्त्तविद्या
हीनद्विजालर्म ॥ ॥ इहमदृक्पिसा धनमदृकाजन वपुस्ताथवसति योति
सा विद्यामसवब्राह्मणधर्मे उल्याख ॥ ८५ ॥ एतत्तन्त्रलीलेपश्च एतत्त
न दिव्यतादिज्ञः ॥ एतत्तन्त्रतयस्तुक्ता वरा - नूनस्य एतत्तन्त्रे ॥ ॥ लीखया एत
त्तान्तरूपं पल्प ब्राह्मण गुरुया कनाने एतत्तान्तरूपं नूनश्रवक द्यावलसा हा
शन ॥ ८६ ॥ यद्वा सर्ववविज्ञानी पूर्वार्णकलहां सर्व ॥ पुनश्चा सर्ववनामी
र्ण गवाणं तदामृतसर्व ॥ ॥ ब्राह्मण पाउत्सा हाहनै प्रकृषायै पूर्वया उत्सा हा
हनै कवान पिशाया उत्सा हाहनै नकवविज्ञावधाव ॥ ८७ ॥ अग्निहा गुरुलेव

दलील वृत्ति हलं लुत्तं ॥ वतिपूत्र हलं नानी दल नुक हलं धनं ॥ वंद
 सयकाया हलनं मृगिहा प्रयाय मृगमु दं हलनं ॥ लील हिनकं मु प्रसं
 गयादा हलनं काय दयकं धनं दव हल दानयाय हिनकं नय ॥ दद ॥
 मृगिर्द हतितापेन सूर्याद हने न ह्योति ॥ बाजा द हतिंद लुन गयसा वा
 क्लृप्त द हत ॥ मंननं व तापन सूर्यस्य द हन पिव कि वलन बाजान
 द हन पिव द न्यया दा व ॥ बाक्लं लन गयसा व नन द हन पिव ॥ दद ॥ सनसा
 कं मृत्तं मां स कं वल मयितं दधि ॥ गर्जन्या द नु घर्ष व दुर्त्य गम मां सत क
 लं ॥ नात्य वा न लिकला ला हान हि या ध वि वा न वा वृ यान ध
 न गम मां सनया व दुत्य ॥ २० ॥ न हन्या न मतिंद या ग ह म मा ना न द ध न
 ॥ प्रय ॥ १ ॥ कां पनिल ध र क मा सं य धि वि न ॥ थ म स्या य म न व
 स्या व धाय म न व स्या क मा यं म न व न य य धि वि न न व ॥ २१ ॥ न मां

सत क ली दा ष न म र्द्य न व मे थून ॥ प्रवृत्ति न व ल ता नां निवृत्ति मु म हा ह
 लं ॥ लानया न दा ष म द्ध थ ना दा न द ष म द्ध काम सं व ल धा न दा ष
 म द्ध प्रालिया ला ला व थ न निवृत्ति न ता ल सा म हा ह ल ना क ॥ २२ ॥
 व दु ॥ सा ग न प र्थ ना या द र्घा पृ थि वी सि मा ॥ न खा द द्वा पि या मां सं दु
 त्य म न दि दू र्ध ध ॥ ॥ पिव स म्द न दू क प थि व न बा जान दान विं या
 हल व न्य क्कान ना ता उ ता व नी ला मा सि रु य उ र्दि हल ना क रु ना ॥ २३ ॥
 मृगि ना पं प्रिया मूर्ख ॥ सूर्य ना रु क ला नि व ॥ नित्य मे वी प वा न ल स य प्र
 ठा ह ना नि ष ठ ॥ मं ली व प न मु मूर्ख वी बा जा थ गं डा स दा द
 उ प वा न ल प्रो ल मा कं रु व थ मृ ता न ॥ २४ ॥ ॥ लुक्क मां सं मु यी व द्वा
 वा ला र्क स्म नू ल्म द धि ॥ प्र ता र्क मे थून नि डा स य ॥ प्रो ल रु ना लि ष ठ
 ॥ ॥ सू व्ना रि थि क ला न क ल व सूर्य मृ र्वा धो स थ मे थून

क्रि ३, धनं वृत्तान मथ्यं प्राणमावकं हव ॥ २१ ॥ सद्यमासि घृतं सद्य-
 वा ला म्नी की न ला जने ॥ उवा दक न न्द्रा या ४ सद्य प्राण क ना लि ष ट्
 ॥ ॥ न उ ला : न उ धन वा ल क म्नी, की न जा का क तं ख न ना सि
 या वः सि मा कं वा क्य को व वा न्य धृ पू ता न ॥ म थानं प्रा ण ति हा जं व य
 ॥ ॥ २५ ॥ मन्ना द दू ग लं पिष्टं, पा द्मा दं दू ग लं पय ॥ पय द दू ग लं मा
 सं मा सा द दू ग लं घृतं ॥ ॥ मन्त्र या सि ने वा य ग ल मा ठ, मा द या वा यः
 गु ल दू द, दू द या वा द गु ल ला ला या वा य गु ल ध न रु न ॥ ॥ ॥
 पं व कि पु वि ने र्ध ति न द्वा ल द न्ध या न व ॥ म्नि म्नि नि व का मि व, गु र द
 षी न ये व व ॥ ॥ ध दा ता ता ल न मा ल, न दि ला ति ग व न २ का श नः
 म्मान्य न व, गु र द्वा वि ध दा क्क म थ म्मा य ॥ २८ ॥ गे म ति वि प्र य व
 डे व स ती ति ४ स त्प वा दि ति ४ ॥ म्नि द्वा न नी ल म्नि स फ ति द्वा य न म

ही ॥ ॥ सा द क, वा क्क म द क्क वे द, स त्प द व, स त्प वा दी द क्क ॥ म
 ला ति द क्क, दान नी ल द क्क ध क्क स ता न, २ पृ थि वी ध न व पा व न लं ॥
 ॥ ॥ म्नि सा ने पि हि स सा न, सा न म त व डे व य का म्नि म्नि सा ४ ॥ स ता स
 ग्नि तं ग म्नि ४ नं पु र ज न ॥ ॥ म्नि सा न स सा न ध य ता सा न रु न, दू द
 ध न सा, का नी वा स वा न, स त्प पु नू ष व स ग या य गं ग रु ल न ॥ श्री ३ न
 सा द व पु र जा या य, ध न सा न द ता ॥ ३०० ॥ ॥ ति या न क्क सा न स ग रु र
 नी य न त क ४ स मा फ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ कुं न मा रु ग व न वा स द वा य ॥
 वृ ष्णी न्ध वा वा वा ॥ वि ष्णु पं रु ल कं दि वा, स र्व दू ष नि वा न न ॥ उ ग त जा म ला यीः
 य, स र्व न रु नि कृ त न ॥ १ ॥ वि पु र द क्क मा न न, वृ ष्ण म्नि न्ध व रु नी, तं द हं
 स प्र व रु मि मा स न रु स द रु व न ॥ २ ॥ पा दो न रु उ ग्नि वि द्वा जं घ या म्नि
 वि वि रु म ४ ॥ उ र्वा मु क म वा न रु के र्वा वे व रु ना द न ॥ ३ ॥ ना सा मु म्नि

ना नरु पुष्पं तु वा मनस्तथा । उदने पचनार्हं व हनिष्ये व नरु उ ॥ ४ ॥
 कामपाशं त ना विष्णु दक्षिणे मधुसूदन ॥ ५ ॥ की ॥ ० नरु उ वा नार्हं कृष्णं व
 मुखमं उ ले । माधवो कर्णु या नरु कृष्णो कं नीव ना सिका ॥ ६ ॥ ने शी नाना
 य ॥ ७ ॥ नरु कृष्णं ललाटे ग नू उ ध ग ॥ कपाल कं ग वा नरु कृष्णं ने न तं यं नरु उ ॥
 ॥ ८ ॥ ग्री वस्तु सर्व ग नू ध नरु म पू नू धा ल म ॥ पूर्व पूर्व उ नी का कृष्णं सा प्र मा
 ग्री ध नस्तथा ॥ ९ ॥ दक्षिणे ना न सिं हं उ ने ल्य मु द्रा मा द न । पू नू धा ल म
 वा नू धां वा य वा पी त वा स सा ॥ १० ॥ ग ग ध न मु को व न । ग्री व पी त न ता
 दि त ॥ पा ता ले धू ग ता नरु कृष्णं सा का ल मधुसू द न र्ग न ॥ ११ ॥ स नि ॥ १२ ॥ सर्व
 ग नू धू प्र वि ष्ठा वि षू र्पं ग त ॥ वि षू र्पं ग त प वि ता र्हं वि व ना प्र म ही त ले
 ॥ १३ ॥ ना नू धा न प ॥ १४ ॥ धा न स ग्रा म ग र्ग न क र्ग ॥ न दी धू त न न ॥ १५ ॥
 वा धु वी व ह य स्तथा ॥ १६ ॥ अ सि द म्ब नि पा त म् रु त ग र ह नि वा न न ॥

दक्षिणी त नू धू ल यं ना सि क दा व न ॥ १७ ॥ नरु नरु म हा द व
 वरु नरु म हा द व । नरु उ सर्व द वा नी वृ ष्ठा वि षू म ही न ॥ १८ ॥ दि वा
 नरु उ ल यार्हं वा नो नरु उ र्ध्व उ मा स द व नरु उ वि षू सर्व स्था न ग ना
 र्द न ॥ १९ ॥ म हा वि षू ह न ॥ २० ॥ उ क ला उ नू त र्ग न । म्ही रु त्पा वा ल ह
 त्या व । स ना या वि ष ली य नि ॥ २१ ॥ ग ले नरु उ वा नार्हं रु ले नरु उ वा
 वा मन ॥ २२ ॥ अ ग वा ना न सिं हं उ सर्व पा नू र्ग न व ॥ २३ ॥ के व र्वा स द व
 स्य ॥ २४ ॥ ० न व नि त्य ग । न ल यं न य दा वि ड् सर्व वा धि नि वा व ली ॥ २५ ॥
 वि धी र्थी ल र्ग वि धा ध ना र्थी ल र्ग वि धा ध ना र्थी ल र्ग ध र्ग । क न्या
 र्थी ल र्ग क न्या । मा र्ग र्थी ल र्ग न ग नि ॥ २६ ॥ म्पू त्र ल र्ग पृ शी म
 ला र्थी ल र्ग म्ही य । का । मा र्थी ल र्ग का र्ग वि षू ला कं स ग रु ति ॥ २७ ॥

